GENIUS BEE
A GREAT LEARNER

अध्यापक सहायक पुस्तिका
(6-8)

नायरा

हिन्दी पाठ्यपुस्तक

Book-6 2
Book-7 21
Book-8 40

1 कलम, आज उनकी जय....

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (iv), (ii)
2. **क.** इस कविता में कवि ने देशप्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से भरे देशभक्तों के द्वारा दिए बलिदान का वर्णन किया है। कलम आज उनकी जय बोल कविता के माध्यम से कवि कहता है, हे कलम आज उन वीर शहीदों की विजय का गुणगान कर, उनके प्रशंसाओं के गीत लिख, जिन सपूतों ने अपना सब कुछ बलिदान करके देश में क्रांति की भावना जाग्रत की है।

   ख. 'चिटकाई जिसने चिनगारी' से कवि का अभिप्राय है कि जिन वीर देशभक्तों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया है, वे महान हैं। उन्होंने अपने प्राणों का त्याग करके अपने देश के लिए स्वयं को न्यौछावर कर दिया है।

   ग. वीर देशभक्तों के लिए कवि ने 'अगणित लघु दीप' का प्रयोग किया है।
3. **संदर्भ :** प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य पुस्तक 'नायरा' के पाठ-1 'कलम, आज उनकी जय....' नामक कविता से ली गयी है, जिसके कवि 'रामधारी सिंह दिनकर' जी हैं।

   प्रसंग : इन पंक्तियों में कवि देशभक्तों के बलिदान के विषय में बता रहा है। दिनकर जी ने निस्वार्थ भाव से देश पर न्योछावर, होने वाले वीरों का गुणगान किया है।

   भावार्थ : कलम! उनका विजयगान कर, जो असंख्य छोटे दीपक जलकर बिना तेल बुझ गए, उन अगणित वीरों का यशगान, कर जो देश की आन पर मर मिटे, परन्तु उन्होंने किसी से भी स्नेह की मांग नहीं की। हे कलम आज तू उन वीर शहीदों की विजय का गुणगान कर।

भाषा की बात......

1.

जल	–	पानी	जलना	वर	–	दूल्हा	वरदान
भाग	–	भागना	विभाजन	लाल	–	रंग	पुत्र
मोल	–	मूल्य	दाम	हार	–	पराजय	आभूषण

2.

जलना	×	बुझना	जय	×	पराजय	आज	×	कल
पुण्य	×	पाप	लघु	×	बड़ा	दिन	×	रात
धरती	×	आकाश	यश	×	अपयश	एकता	×	अनेकता

3. **क.** पुररुक्ति प्रकाश; **ख.** अनुप्रास; **ग.** अनुप्रास; **घ.** पुनरुक्ति प्रकाश; **ङ.** अनुप्रास

अपठित काव्यांश

1. फूल चाहता है कि हे वनमाली मुझे तुम उस पथ पर फेक देना जहाँ वीर अपनी मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जाते हैं।
2. फूलों का उपयोग गहनों, मालाओं, शव आदि पर किया जाता है।
3. फूल के हृदय में देश-प्रेम का मूल भाव है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वह देश की रक्षा करने वाले वीरों के पथ पर बिछने को व्याकुल है।

2 भाड़ में भुनी हवेली

लिखित कार्य

1. **क.** (iii); **ख.** (i); **ग.** (iv); **घ.** (ii)

2. **क.** गाँव के ज़मींदार उदयभान भुनगी से मुफ़्त में दाने भुनवाते थे। भुनगी को उनके घर का पानी भी भरना पड़ता था। इस कारण उसे कई बार भाड़ भी बंद रखना पड़ता था। पंडित जी भुनगी से बेगार करवाना अपना अधिकार समझते थे। चूँकि वह उनके गाँव में उनकी ज़मीन पर रहती थी।

   ख. क्योंकि भुनगी इतना सारा अनाज भुन नहीं पायी थी। परिणाम यह हुआ कि उसी रात को भाड़ खोद डाला गया।

   ग. क्योंकि भुनगी बचपन से इसी गाँव में बड़ी हुई थी। इसके बाप-दादा, सास-ससुर भी इसी गाँव में रहते थे।

   घ. पवन भी वेग से ऊर्ध्वगामी लपटें पूर्व की ओर दौड़ने लगीं। भाड़ के समीप ही किसानों की कई झोंपड़ियाँ थीं, वे सब आग का ग्रास बन गईं। लपटें कुछ और आगे बढ़ीं। सामने पंडित उदयभान की हवेली थी, और हवेली में आग लग गई।

3. **क.** चपरासी ताकीद कर गए कि तीसरे पहर तक सारा दाना भुन जाना चाहिए। भुनगी अनाज भूनने लगी। लेकिन मनभर अनाज भूनना आसान नहीं था।

   ख. उसे भय हुआ कि ज़मींदार के आदमी आते होंगे। उसने और वेग से हाथ चलाना शुरू किया।

   ग. अनाज भूनने के साथ-साथ भुनगी दाना भुन रही थी। फिर बीच-बीच में भुनाई बंद करके भाड़ भी झोंकना पड़ता था।

4. **क.** इस पंक्ति में लेखन ने बताया है कि भुनगी की भाड़ नष्ट होने के कारण वह बेसहारा हो गयी थी। जिस कारण उसे अब रोटियों का भी सहारा न रह गया था। भाड़ नष्ट हो जाने के कारण उसको अब खाने की भी परेशानी हो गयी थी।

   ख. जब उदयभान ने भुनगी को गाँव छोड़ने को कहा तो भुनगी ने कहा कि यह झोपड़ी तो मैं उसी दिन छोड़ूँगी जिस दिन मेरी मृत्यु हो जायेगी।

5.

	किसने कहा	किससे कहा
क.	भुनगी ने	चपरासी से
ख.	चपरासी ने	भुनगी से
ग.	पंडित ने	भुनगी से
घ.	भुनगी ने	पंडित से
ङ.	पंडित ने	चपरासियों से

भाषा की बात......

1.

ज़मींदार – जमीदारनी	पुरुष – महिला	महाराज – महारानी
पंडित – पंडिताइन	पिता – माता	सास – ससुर
वृद्ध – वृद्धा	माली – मालिन	बुढ़िया – बुड्ढ़ा

2. **क.** उनके, वे; **ख.** उसे; **ग.** तुझसे, यह; **घ.** यह, तू, उसे; **ङ.** अपना, मुझे

3. गार – कारागार काश – अवकाश संभव – असंभव
   देश – देशभक्त लीन – विलीन गमन – अभिगमन

4. **क.** बहुत गुस्सा आना
   बुढ़िया ने भाड़ की ओर ताका तो बदन में आग सी लग गई
   ख. बहुत क्रोधित होना
   रामू ने होमवर्क नहीं किया इसलिए अध्यापक आग बबूला हो गये।
   ग. बहुत ऊँचा होना
   मुंबई की इमारतें आकाश से बातें करती हैं।

शिष्टता का महत्व

लिखित कार्य

1. **क.** (iii); **ख.** (ii); **ग.** (i); **घ.** (ii)

2. **क.** अशिष्ट व्यवहार से दूसरों का दिल दुखता है और उससे अंत में हमें भी हानि होती है।
   ख. विनम्रता और दीनता में अंतर है। विन्रम होते हुए भी हम अपने स्वाभिमान की रक्षा कर सकते हैं। विनम्र व्यवहार का अर्थ चापलूसी नहीं है। यदि कभी यह महसूस हो कि जिसके प्रति हम विनीत हैं, वह हमारा तिरस्कार कर रहा है अथवा हमें दीन-हीन जानकर हमारे प्रति दया की भावना प्रकट कर रहा है, तो उसकी कृपा प्राप्त करने की चेष्टा हमें नहीं करनी चाहिए।
   ग. हमें उसके प्रति अपनी कृतज्ञता अवश्य प्रकट करनी चाहिए। इसका सबसे सरल उपाय है, उसे धन्यवाद देना। यदि बस या रेल में कोई अपनी जगह हमें बैठने के लिए देता है, तो उसे धन्यवाद अवश्य देना चाहिए।
   घ. दूसरों के साथ भोजन करते समय भी हमें विशेष सावधानी रखनी चाहिए। हमें खाने में अधीरता नहीं दिखानी चाहिए। चबाते समय मुँह से आवाज करना अच्छा नहीं माना जाता। अपने से बड़ों के भोजन समाप्त कर लेने पर भी खाते रहना उचित नहीं है।
   ङ. अनुशासन समाज के नैतिक नियमों का भी हो सकता है और कानून की धाराओं का भी। उदाहरणार्थ—किसी मंदिर, गुरुद्वारे या मस्जिद में प्रवेश करने से पहले जूते उतार देना धार्मिक अनुशासन का पालन है। सड़क पर बाईं ओर चलना अथवा जहाँ मना हो, वहाँ न जाना कानून के अनुशासन का पालन है। समय का पालन करना सामाजिक नियमों का पालन है। ठीक समय पर कहीं पहुँचना अनुशासन भी सिखाता है और लाभ भी पहुँचाता है।

3. **क.** हमें खाने में अधीरता नहीं दिखानी चाहिए। चबाते समय मुँह से आवाज करना अच्छा नहीं माना जाता।
   ख. घर पर आए अतिथि के लिए हमें उनके रूचि का भोजन बनवाना चाहिए।
   ग. किसी मंदिर, गुरुद्वारे या मस्जिद में प्रवेश करने से पहले जूते उतार देना धार्मिक अनुशासन है।

4. **क.** उच्च व्यवहार; **ख.** शिष्टता; **ग.** धन्यवाद करना चाहिए; **घ.** उचित व्यवहार; **ङ.** सीधे खड़े रहना चाहिए

5. **क.** ✗; **ख.** ✓; **ग.** ✓; **घ.** ✗; **ङ.** ✓; **च.** ✗

भाषा की बात.....

1. स्व + अभिमान (अ + अ = आ) = स्वाभिमान
   हिम + आलय (अ + आ = आ) = हिमालय
   मुनि + ईश (इ + ई = ई) = मुनीश
   रजनी + ईश (ई + ई = ई) = रजनीश
   सु + उक्ति (उ + उ = ऊ) = सुक्ति
   नर + ईश (अ + ई = ए) = नरेश
   रमा + ईश (आ + ई = ए) = रमेश
   लघु + ऊर्मि (उ + ऊ = ऊ) = लघुर्मि

2. कटु – कटुता कर्कश – कर्कशता अशिष्ट – अशिष्टता
   दीन – दीनता हीन – हीनता कृतज्ञ – कृतज्ञता
   सभ्य – सभ्यता मधुर – मधुरता दुष्ट – दुष्टता

3. **क.** जब अतिथि खाना खा रहे हों, तब उनके मना करने पर रोटी पूड़ी सब्ज़ी आदि उनकी थाली में ज़बरदस्ती नहीं रखनी चाहिए।
   ख. जमींदार अपनी भूमि संपत्ति प्रतिष्ठा मान मर्यादा सभी कुछ गँवा बैठा।
   ग. किसी मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, और चर्च में प्रवेश करने से पहले जूते उतार देना धार्मिक अनुशासन का पालन है।

4 गाय की चोरी

लिखित कार्य

1. **क.** (iii); **ख.** (iii); **ग.** (ii)

2. **क.** कोई बात यदि मुंशी प्यारे लाल को पहले से मालूम हुई तो फिर उसका और भी अधिक प्रचार होता, क्योंकि वे तंबाकू वाले की दुकान से लेकर कोयला ठेकेदार के गोदाम तक और वकील साहब के नौकरों से लेकर मुक्की कपड़े वाले की दुकान तक, जो भी मिलता उससे चर्चा छेड़कर कुछ-न-कुछ जानने की कोशिश करते। फिर जितना मालूम होता उसमें अपने पास से कुछ जोड़कर सुनाते जाते और आगे की बात मालूम करते जाते।

   ख. मुंशी जी अपनी बात को बड़े अंदाज से घुमाते हुए बोले, ''यह गाय ज़रूर रात दो बजे के करीब खोली गई है। कुछ आहट तो उस वक्त हुई थी, मैं तो बड़ा चौकन्ना सोता हूँ। इधर-उधर देखा, पर कुछ नज़र नहीं आया। सोचा हवा होगी। उसके थोड़ी देर बाद फिर खुरखुराहट सुनाई पड़ी.....अब यह तो उस वक्त नहीं सोचा कि कोई गैया खोले ले जा रहा है, पर लगा मुझे ऐसा कि जैसे गाय चल रही है। यही खयाल किया कि शायद अपने थान पर उठक-बैठक मचाए है, मच्छर परेशान कर रहे होंगे।''

ग. मुंशी जी नगला में किसी अहीर के यहाँ फ़ौज़दारी करने गए थे। उनकी ज़मींदारी के पाँच-सात किसान भी उनके साथ थे। लाठी चल गई थी। सुना था कि अपनी चोरी की गाय का सुराग लगाकर वहाँ पहुँचे थे। कैसे पहुँचे; यह कोई नहीं जानता, पर गाय उन्होंने ले ली थी।

उससे अगली सुबह मुंशी प्यारे लाल के साथ तीन आदमी और चले आ रहे थे और पीछे-पीछे गरदन झुकाए, पूँछ हिलाती बुढ़िया की गाय चली आ रही थी, जिसकी रस्सी उनके हाथ में थी।

घ. सभी लोग मुंशी जी और गाय को देखकर जमा हो गए थे। बूढ़ी अपनी गैया की गरदन और मुँह पर हाथ फेर रही थी और मुंशी प्यारे लाल लोगों की आँखों में विश्वास खोजते हुए बयान कर रहे थे, ''पुलिस भला क्या कर सकती थी? मैं तो पहले ही जानता था। जो काम करना हो, अपने बूते पर उठाना चाहिए।

3.

	किसने कहा	**किससे कहा**
क.	डॉक्टर साहब ने	मुंशी जी से
ख.	मुंशी जी ने	गाँव वालों से
ग.	मंशी जी ने	थानेदार से
घ.	डॉक्टर ने	मुंशी जी से

भाषा की बात.....

1.

ठीक × गलत	गरम × ठंडा	योग्य × अयोग्य
एक × अनेक	सवेरा × शाम	शांत × शोर

2.

गैरहाज़िर – अनुपस्थित	तबाह – बर्बाद	ज़रूर – अवश्य
शिकस्त – हरा देना	यकीन – विश्वास	राय – सलाह
खबर – समाचार	ज़मीन – धरती	गुबार – भडास

3. क. छप्परवाली बूढ़ी के साथ उस रात क्या हुआ?

ख. पुलिस का नाम सुनकर मुंशी जी को क्या हुआ?

ग. किसका बदन काँपने लगा और आँखे फैल गई?

घ. तीन आदमी किसके साथ चले आ रहे थे?

4. क. घबराना

पत्नी की मृत्यु का समाचार सुनते ही वह हक्का-बक्का रह गया।

ख. बहुत अधिक घमंड करना

अपनी अमीरी की वजह से सोनू का दिमाग हमेशा सातवें आसमान पर रहता है।

ग. मर जाना

रामू के बाप की तबीयत खराब होने के कारण उनकी आँखें बंद हो गयी।

घ. मन का मलाल दूर करना

अपने बेटे के विवाह में पंडित रामदीन ने अपने दिल के सारे गुबार निकाल लिए।

ङ. अचानक मुसीबत आना।

राम पर इतने दुखों का पहाड़ टूट पड़े है। कि अब वह सुख क्या होता है भूल गया।

5 थोड़ी धरती पाऊँ

लिखित कार्य

1. **क.** (iii); **ख.** (iv); **ग.** (iv)
2. **क.** सभ्यता के विकास का मोल प्रकृति को चुकाना पड़ता है क्योंकि व्यक्ति विकास करने में प्रकृति को नुकसान पहुँचाता है।

   ख. कवि हमसे अपेक्षा कर रहा है कि यदि हमारे पास थोड़ी सी खाली जगह हो तो हमें उसमें खेती कर लेनी चाहिए तथा पेड़ों को लगाना चाहिए। हमें खाली स्थानों पर बगीचे बनाने चाहिए जिसमें कई फल और फूलों के पेड़ लगे हों तथा पशु पक्षी हो। हमें कभी भी ऐसी दुनिया में नहीं खोना चाहिए जो शांत हो। हमें पेड़ों को नहीं काटना चाहिए।

   ग. हाँ, पेड़ों की शाखाएँ कटने पर वे बच्चों की तरह रोते हैं।
3. **क.** इस पंक्ति में कवि कहता है कि यदि हमारे पास थोड़ी सी खाली जगह हो तो हमें उस पर खेती करनी चाहिए जिससे वह फसल से भर जाए।

   ख. इस पंक्ति से कवि का आशय है कि हम विकास के लिए पेड़-पौधों को काटते जा रहे हैं जिसमें प्रकृति को बहुत कष्ट होता है। हमारे दुष्कर्मों का फल प्रकृति को सहन करना पड़ता है। पेड़-पौधों तो हमारे संसार को हरा-भरा रखते हैं परंतु हमारे दुष्कर्मों से उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
4. **संदर्भ :** प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य पुस्तक 'नायरा' के पाठ-5 'थोड़ी धरती पाऊँ' नामक पाठ से ली गयी है। इसके कवि 'सर्वेश्वर दया सक्सेना' है।

   प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने पेड़ों से होने वाले लाभ व प्रकृति के विषय में बताया है।

   भावार्थ : कवि कहता है कि हम मनुष्यों को पेड़ों के साथ जीवन जीने की आदत डाल लेनी चाहिए। उनके साथ जीवन यापन करने से जीवन बड़ा सुखमय हो जाएगा। कवि का मानना है कि पेड़ और बच्चे दुनिया को हरा भरा रखते हैं। जो लोग इस बात को नहीं मानते हैं, वे इन गलत कार्यों का फल भोगते हैं। आज हमारी आधुनिक सभ्यता पागलों की तरह पेड़ों तथा वनों को काटे जा रही है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि वातसवरण में प्रदूषण फैलकर सभी को बीमार कर रही है।

भाषा की बात......

1. **क.** मुलायम; **ख.** कठोर; **ग.** लाल; **घ.** काली; **ङ.** मीठा; **च.** ठंडा; **छ.** चिकना; **ज.** विशाल
2.

क. फूल	पुष्प	बगीचे में कई रंगों के फूल थे।
	एक आभूषण	उसने मुझे एक सुन्दर आभूषण भेंट किया।
ख. मत	वोट	18 वर्ष के बाद वोट डालने का अधिकार मिलता है।
	मना करना	किसी की बुराई मत करो।

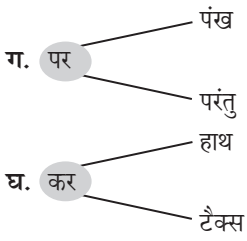

ग. पर — पंख : चिड़िया के पंख बहुत मुलायम थे।
पर — परंतु : मैंने उसका इंतजार किया परंतु वह नहीं आया।

घ. कर — हाथ : हमें हमेशा हाथ धोकर ही खाना चाहिए।
कर — टैक्स : हमें समय पर सभी टैक्स भरने चाहिए।

3.

धरती	—	भूमि	जमीन	धरा
पेड़	—	वृक्ष	तरु	विटप
फूल	—	पुष्प	कुसुम	सुमन
दुनिया	—	जगत	संसार	जग
जलाशय	—	सरोवर	तालाब	पुष्कर
ज़हर	—	हलाहल	विष	कालकूट
पक्षी	—	परिंदा	खग	विहग
हवा	—	वायु	समीर	पवन

2.

दिन	×	रात	धरती	×	आसमान	खुशबू	×	बदबू
ताज़ी	×	बासी	अपना	×	पराया	शांत	×	शोर
खोना	×	पाना	एक	×	अनेक	सभ्य	×	असभ्य

3.

पाऊँ	–	लगाऊँ	धरती	–	भरती	महक	–	चहक
घूम	–	झूम	खोना	–	बोना	खिलना	–	मिलना
रखते	–	चखते	काट	–	बाट	सोते	–	रोते

6 पिता का पत्र

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (iii); **ग.** (ii); **घ.** (i)
2. **क.** गाँधी जी ने पुत्र से कहा कि तुम रामदास और देवदास को सँभाल रहे हो, यदि तुम यह काम अच्छी तरह और आनंद से करते हो, तो तुम्हारी आधी शिक्षा पूरी हो जायेगी।
   ख. अपनी आत्मा का, अपने आप का और ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना ही अक्षर ज्ञान है।
   ग. गरीबी के संबंध में लेखक के विचार है कि गरीबी में ही सुख है। अमीरी की तुलना में गरीबी अधिक सुखद है। (अपने विचार स्वयं कीजिए)
   घ. लेखक के अनुसार एक योग्य किसान बनने के लिए किसान को खेत में घास खोदने तथा गड्ढे भरने में पूरा समय देना चाहिए तथा सभी औजारों को सदा साफ़ और सुव्यवस्थित रखना चाहिए।
   ङ. 'प्रार्थना' के विषय में पत्र में लिखा गया कि रोज शाम को नियमपूर्वक प्रार्थना करनी चाहिए। सूर्योदय से पहले उठकर प्रार्थना करना बहुत ही अच्छा है। प्रार्थना प्रयत्नपूर्वक एक निश्चित समय पर ही करनी चाहिए।

3. **क.** गणित और संस्कृत दोनों विषय को बड़ी उम्र में सीखना कठिन है।

ख. काम की अधिकता से मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए और न ही यह सोचना चाहिए कि यह कैसे होगा और पहले क्या करूँ।

ग. गाँधी जी ने अपने पुत्र से आशा की है कि घर-खर्च के लिए जो भी तुम खर्च करते हो, उसका पैसे-पैसे का हिसाब रखते हो।

भाषा की बात.....

1. आशा × निराशा सुखद × दुखद सद्‌गुण × अवगुण
   नियमित × अनियमित सूर्यास्त × सूर्योदय योग्य × अयोग्य
2. **क.** प्रति + दिन — प्रतिदिन = रोज़ाना — हमें प्रतिदिन नहाना चाहिए।

   ख. प्रति + सप्ताह — प्रतिसप्ताह = हर सप्ताह — वह हर सप्ताह मंदिर जाता है।

   ग. प्रति + वाद — प्रतिवाद = विरोध — गाँधी जी हमेशा गलत बात का विरोध करते थे।

   घ. प्रति + कूल — प्रतिकूल = विपरीत — राम के विपरीत श्याम ज्यादा होशियार है।
3. समालोचना सम + आलोचना | स्वाभाविक स्वभाव + इक | सूर्योदय सूर्य + उदय
   सूर्यास्त सूर्य + अस्त | प्रत्येक प्रति + इक | विद्‌याध्ययन विद्‌य + अध्ययन

7 ताँगेवाला

लिखित कार्य

1. **क.** (iii); **ख.** (i); **ग.** (iii)
2. **क.** तांगेवाला पाँच सालों से ताँगा चला रहा है। उसका मानना है कि किसी की नौकरी करने से अच्छा है। तबीयत हुई जोता, न तबियत हुई बैठे रहो। किसी की ताबेदारी नहीं अपने मन का राज है।

   ख. ताँगेवाले को इतिहास की अच्छी जानकारी इसलिए थी क्योंकि उसने जब से सत्तावन के गदर का इतिहास पढ़ा कि फिरंगी कैसे आए और कैसे सारे हिंदुस्तान में फैल गए यह जाना।

   ग. सन् सत्तावन के गदर में अगर हिंदुस्तानियों में एकता होती हो पासा ही पलट जाता। मौलवी अहमद शाह और तात्या टोपे सरीखे देशभक्त वीरों को भी हम से कुछ धोखेबाज लोगों ने धोखा देकर दुश्मनों के हवाले कर दिया। इसलिए ताँगेवाला अपने ही देशवासियों से आहत था।

   घ. ताँगेवाले ने नदी का पानी बहुत साफ और मीठा बताया। और कहा कि सन् सत्तावन के गदर में तात्या टोपे दुश्मनों की सेना को चीरते हुए यहीं से नदी के पार चला गया था।

   ङ. शुरु-शुरु में ताँगे पर बैठकर नायक ने एक साथी के अभाव का अनुभव किया था, किंतु ये तेइस मील कब पूरे हो गए, उन्हें पता भी नहीं चला।
3. **क.** ताँगेवाला, लेखक से कह रहा है।

ख. 'फिरंगी' अंग्रेजों को कहा गया है।

ग. फिरंगियों ने गाँव-के-गाँव जला दिए, औरतों को बेइज्जत किया, निरपराध लोगों को तोपों के मुँह से बाँधकर उड़ा दिया।

भाषा की बात.....

1. धनवान – धन + वान सोलहवाँ – सोलह + वाँ
   ग्वालिन – ग्वाल + इन लालिमा – लालि + मा
   दयालु – दया + लु टिकाऊ – टिक + आऊ
   सैनिक – सैन + इक चिकनाहट – चिकन + आहट
2. **क.** सुनसान, वीरान; **ख.** पांडुलिपि; **ग.** निरपराध; **घ.** दैनिक; **ङ.** अदृश्य; **च.** अमर; **छ.** पृथ्वीवासी; **ज.** रेखांकित
3. अधिक — ज्यादा, राम अपने खेतों में बहुत अधिक मेहनत करता था।
   काफ़ी — बहुत, मोहन काफ़ी दिनों से स्कूल नहीं आया।
   अवस्था — हालत, आपकी अवस्था खराब चल रही है।
   आयु — उम्र, राहुल की आयु अपने भाई की आयु से दो साल कम है।
4. **क.** अवगुण; **ख.** असत्य; **ग.** नास्तिक; **घ.** असह्य; **ङ.** पराया

अभ्यास का परिणाम

लिखित कार्य

1. **क.** (iv); **ख.** (ii); **ग.** (i)
2. **क.** पूरे बत्तीस पेज का साप्ताहिक अखबार था। शुरू से लेकर अंत तक गाँव की ही बातें छपी थीं। बड़े ही सुंदर ढंग से सात दिनों के समाचार छाँट-छाँटकर छापे गए थे। किसानों के लिए जानकारी की बहतु-सी बातें भी थीं।

   ख. लेखक का नाम सुनते ही महीपाल सिंह एकाएक उछल पड़े। उन्होंने तेजी के साथ आगे बढ़कर लेखक को अपने हृदय से लगा लिया।

   ग. महीपाल सिंह ने जवाब दिया—''शर्मा जी, दाएँ-बाएँ में कुछ फ़र्क नहीं होता। जो गुण दाएँ हाथ में होता है, वही बाएँ हाथ में भी होता है। यह तो व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह किस हाथ से काम करता है।''

   घ. सेवामुक्त होकर संपादक महोदय ने निर्णय लिया कि वे पढ़ेंगे-लिखेंगे और फिर उसके बाद अखबार निकालेंगे। सरकार ने भी उनके पढ़ने-लिखने और अखबार निकालने का पूरा इंतजाम कर दिया।
3. **क.** कुएँ की दीवार के पत्थर पर बार-बार रस्सी के आने-जाने की रगड़ से निशान बन जाते हैं, उसी प्रकार लगातार अभ्यास से अल्पबुद्धि भी बुद्धिमान बन सकता है।

   ख. जब लेखक ने देखा कि महीपाल सिंह के दायाँ हाथ नहीं है फिर भी बहुत सुंदर लेख लिखते हैं। बस यही सब देखकर वो सोचने लगे कि जीवन में क्या हो सकता है, कोई कुछ नहीं जानता।

4. **क.** महीपाल सिंह ने; **ख.** महीपाल सिंह ने; **ग.** महीपाल सिंह ने; **घ.** अखिलेश शर्मा ने; **ङ.** महीपाल सिंह ने

भाषा की बात.....

1. **क.**	वे कभी कविता और कभी कहानी माँगते थे।	कालवाचक क्रियाविशेषण
ख.	वे चुपचाप बैठे थे।	रीतिवाचक क्रियाविशेषण
ग.	बूँद-बूँद से घड़ा भरता है।	रीतिवाचक क्रियाविशेषण
घ.	मंदिर के आस-पास भीड़ जमा थी।	स्थानवाचक क्रियाविशेषण
ङ.	मैं प्रतिदिन लिखने का अभ्यास करता था।	कालवाचक क्रियाविशेषण
2. **क.**	क्या आप महीपाल सिंह हैं?	वर्तमान काल
ख.	मैं कविता पढ़ रहा था।	भूतकाल
ग.	मेरी उनसे कोई जान-पहचान नहीं थी।	भूतकाल
घ.	मैं भी सुंदर लिखने का प्रयास करूँगा।	भविष्यत काल
ङ.	जीवन में सुख-दुख तो आते-जाते रहते हैं।	वर्तमान काल

3. **क.** सम्बन्ध कारक; **ख.** करण कारक; **ग.** करण कारक; **घ.** करण कारक; **ङ.** कर्ता कारक

4. **क.**	असमान	– अलग-अलग	उद्योगों का क्षेत्रीय विकास असंतुलित और असमान था।
	आसमान	– आकाश	अब किसके बूते पर आसमान देख रहे हो।
ख.	पका	– पकना	वह पका आम खा रहा है।
	पक्का	– अटूट	राज ताज धुन का पक्का है।
ग.	शोक	– दुख	राम के ववनवास जाने पर सारे अयोध्यावासी शोक मग्न हो गए।
	शौक	– रुचि	अक्षत को शतरंज का शौक है।

फागुन में सावन

लिखित कार्य

1. **क.** असमय वर्षा होने से मन पुलकित हो जाता है।

   ख. इन पक्तियों में कवि हरियाली का स्वप्न देख रहा है।

   ग. 'जीवन-धन' और 'रस-धन' शब्दों में कवि जीवन रूपी धन तथा रस रूपी बादलों की ओर संकेत कर रहा है। क्योंकि बादलों के जल से ही पृथ्वी हरी-भरी होती है तथा चारों ओर खुशियों की चमक फैल जाती है।

   घ. वास्तव में देखा जाए तो जब धरती गर्मी से तपती है, तभी बारिश के पानी से वह ठंडी होती है अर्थात् ठंडक का एहसास प्राप्त कर पाती है। ठीक उसी प्रकार जीवन में भी दुःख के बाद ही सुख का एहसास व महत्व का पता चलता है। इसलिए ऐसा कहा गया है कि 'कष्ट के बिना सुख का भी कोई अर्थ नहीं होता'।

2. **क.** प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ है कि पानी की बूँदों के पड़ने से पत्र-विहीन डालियों पर फिर से नई पत्तियाँ निकलने लगी है। वृक्षों पर फिर से यौवन आ गया है।

ख. इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि धरती पर बारिश की बूँदें पड़ने से मिट्टी गीली हो गई है और उससे सौंधी-सौंधी खुशबू आ रही है। उपवन भी उत्साह से भर उठे हैं तथा महकने लगे हैं।

ग. कवि कहते हैं कि बिना तपन के तुम्हारा कोई मूल्य नहीं है। अतः जब पृथ्वी गर्म होती है तभी वर्षा होती है अर्थात् रस के रूप में बरसने वाले बादल जीवन रूपी धन को देते हैं।

भाषा की बात.....

1. पुलक – उल्लास सौंधी – मिलना, संयोग थिरकना – इठलाना
   अलि – भौरा तपन – ताप गमक – महक
2. रस-धन
3. सुबह × शाम रात × दिन यौवन × बुढ़ापा
   आकाश × धरती हरियाली × अकाल जीवन × मृत्यु
   मूल्य × अमूल्य सरस × निरस आज × कल

विलक्षण डाकू

लिखित कार्य

1. **क.** (ii); **ख.** (i); **ग.** (iii); **घ.** (ii)
2. **क.** गुरु नानक ने भूमिया के यहाँ भोजन तथा विश्राम करने से मना कर दिया और कहा– मैं किसी दुष्ट आदमी के यहाँ न तो खा-पी सकता हूँ, न ही विश्राम कर सकता हूँ। तुम बहुत ही खराब आदमी हो। तुम गरीबों को लूटते हो, उन्हें सताते हो। मैं चोरी के पैसे का अन्न ग्रहण नहीं कर सकता।

ख. गुरु नानक जी की चार प्रतिज्ञाए निम्न हैं :

पहली प्रतिज्ञा – तुम हमेशा सच बोलोगे।

दूसरी प्रतिज्ञा – तुम्हें अगर लूटमार करनी ही है, तो कभी गरीब को नहीं लूटोगे।

तीसरी प्रतिज्ञा – तुम उस व्यक्ति को हानि नहीं पहुँचाओगे जिसका तुमने नमक खाया है।

चौथी प्रतिज्ञा – चाहे जो भी हो, तुम अपने कर्मों की सजा किसी निरीह व निर्दोष को नहीं भुगतने दोगे।

ग. भूमिया गरीबों को न लूटने की प्रतिज्ञा कर लेता है क्योंकि गरीबों के पास वैसे भी लूटने के लिए होता ही क्या है।

घ. भूमिया ने जमींदार के यहाँ चोरी करने के बाद भी सारा माल वही छोड़ दिया क्योंकि उसने उनका नमक खा लिया था।

ङ. क्योंकि वह जानता था कि चोरी भूमिया ने स्वयं की है। इसलिए भूमिया ने कहा कि बड़े-से-बड़ा चोर भी दया का पात्र हो सकता है।

3. **क.** भूमिया ने; **ख.** गुरु नानक ने; **ग.** गुरु नानक ने; **घ.** जमींदार ने; **ङ.** जमींदार ने

4. **क.** तुम अनेक निष्कपट लोगों को यह सोचकर मूर्ख बना लो कि तुम एक अच्छे और दयालु आदमी हो, लेकिन तुम स्वयं को मूर्ख नहीं बना सकते। तुम अपने आप को जानते हो।

   ख. जब वह रसोई में गया तो फ़र्श पर उसने वहाँ माल-सामान पड़ा पाया। उसकी इस कहानी पर भला कोई विश्वास कर सकता है? इसलिए सबको लगा कि रसोइए जैसा आदमी वास्तव में फाँसी का ही अधिकारी है।

   ग. इसे आशय यह है कि भूमिया ने अपने सभी वचन निभाए हैं। तब जमींदार ने भूमिया से कहा कि मेरी समझ में आपने स्वयं मेरी समस्या हल कर दी है। आपको बिना चोरी किए जीवन जीवन सीखना है।

भाषा की बात.....

1.	स्वागत	– सु + आगत	अत्यंत	– अति + यंत	निष्कपट	– निष् + कपट
	धर्मात्मा	– धर्म + आत्मा	निर्दोष	– निः + दोष	निर्धन	– निः + धन
2.	रुचि	– सुरुचि	बुद्धि	– कुबुद्धि	ख्यात	– कुख्यात
	चक्र	– कुचक्र	पात्र	– सुपात्र	गंध	– सुगंध
	रक्षा	– सुरक्षा	कर्म	– कुकर्म	रीति	– कुरीति
3.	कंटीली	– कांटोवाला	स्वादिष्ट	– स्वाद लगना	ईमानदारी	– ईमानदर
	सौदेबाजी	– सौदा करना	लज्जित	– लज्जा	भाग्यवान	– भाग्य
4.	जपमाला	– जप माला			आज्ञापालन	– आज्ञा पालन
	रसोईघर	– रसोई घर			पगड़ीधारी	– पगड़ी धारी

5. उठ-बैठ – बाबू जी बहुत बीमार है ज्यादा देर उठ-बैठ नहीं सकते।
   चल-फिर – खाना खाने के बाद आधा-घण्टा चलना-फिरना चाहिए।
   चढ़-उतर – घुटनों के दर्द के कारण वह चढ़-उतर नहीं सकता।
   धो-पोंछ – बरतनों को धो-पोछ कर रखना चाहिए।
   आ-जा – उसका बाजार में आना-जाना लगा रहता है।

अपिठत गद्यांश

1. हमेशा हसँते रहने वाले व्यक्ति की पाचन शक्ति मजबूत रहती है, रक्त के बहाव को संतुलित रखती है, मस्तिष्क को तनाव मुक्त करती है और बीमारियाँ पास नहीं भटकती है।
2. हँसी हमारे शरीर और मस्तिष्क को तनाव मुक्त रखती है और व्यक्ति की सकारात्मक सोच भी विकसित होती है।
3. हँसने-हँसाने वाला व्यक्ति आसानी से लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में आने वाली परेशानियों को झेल लेता है और लक्ष्य की ओर पूरे आत्मकवश्विास से कदम बढ़ाता है।

11 साहसी बच्चे

लिखित कार्य

1. **क.** (ii); **ख.** (i); **ग.** (iii); **घ.** (ii); **ङ.** (i)
2. **क.** शोभित ने अपहरणकर्ताओं से मुक्ति पाने की योजना बनाने के लिए उसने अपनी निकर की जेब में पड़ा दस रुपए का अपना इकलौता नोट निकाला और फिर दोनों हाथ से फाड़कर उसके दो टुकड़े कर दिए।

   ख. दस रूपये के नोट को फाड़ने के पीछे शोभित का रहस्य यह था कि उसने उस पर प्याज के रस से लिखकर अपहरकर्ताओं को पकड़वाना चाहता था।

   ग. शोभित ने प्याज के रस से नोट पर जो संदेश लिखा था, जिसे उसका दोसत मीत समझ गया जिससे वह बिरजू और उसके साथी पकड़े गए।

   घ. इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें जीवन में बड़ी-से-बड़ी मुसीबतों से बचने के लिए समझदारी व सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए।

   ङ. नौकर को नियुक्त करते समय ईमानदारी, अचारण और व्यवहार आदि बातों का ध्यान रखना चाहिए।
3. **क.** चोरों ने; **ख.** हर्षिता ने; **ग.** पुलिस ने; **घ.** डा० साहब ने

भाषा की बात......

1.

शब्द		उपसर्ग	मूल शब्द	शब्द		उपसर्ग	मूल शब्द
प्रशासन	–	प्र	शासन	बेहोश	–	बे	होश
सकुशल	–	स	कुशल	दुर्घटना	–	दुर	घटना
अभियान	–	अभि	यान	विज्ञान	–	वि	ज्ञान
सुराग	–	सु	राग	अपहरण	–	अप	हरण

2. **क.** समर्थन; **ख.** निश्चित; **ग.** बुद्धिमान; **घ.** बेईमान
3. मैं दिल्ली जब जाऊँगा यदि तुम भी मेरे साथ चलोगे।

   मैं जब खाना खाऊँगा यदि तुम भी मेरे साथ खाओगे।
4. **क.** दोनो बच्चे लगभग 48 घंटे से लापता थे।

   ख. परिवार के लोग बहुत चिंतित है।

   ग. हर्षिता फूट-फूटकर रोएगी।

   घ. आज बच्चों के घर फिरौती की चिट्ठी पहुँच गई है।

   ङ. शोभित प्याज को कुचलकर रस निकाल रहा है।

   च. बच्चों को सकुशल छुड़ा लेगा।

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (i); **ग.** (iii); **घ.** (iii)
2. **क.** दीना सोचने लगा कि मैं यहाँ तंग सँकरी-सी जगह क्या कर रहा हूँ, जबकि मुझे दूसरी जगह मौका मिल रहा है। दरिया के किनारे की जमीन बहुत उम्दा है। इसीलिए दीना दरिया किनारे बसने को सोचने लगा।

   ख. दीना ने जमीन पक्का करने के लिए सरदार से कहा कि जमीन पक्का करने के लिए दस्तावेज वगैरह भी तो चाहिए, नहीं तो जैसे आज इन्होंने कह दिया कि यह तुम्हारी है, बाद में वैसे ही उसे ले भी सकते हैं। दीना ने कहा, ''सुना है, यहाँ एक सौदागर आया था। उसको भी आपने ज़मीन दी थी और उस जमीन का कागज पक्का कर दिया था। वैसे ही मैं चाहता हूँ कि कागज पक्का हो जाए।''

   ग. दीना ने अपनी ज़मीन, घर-बार बेचकर सब नकदी बनाकर नये तरीके से जीवन शुरू करने की अपनी तैयारी शुरू कर दी और बीवी से कहा कि तुम घर देखना-भालना और खुद एक नौकर को साथ लेकर यात्रा के लिए निकल पड़ा।

   ङ. इस कहानी की सबसे मार्मिक बात यह है कि किसी भी व्यक्ति को लालच नहीं करना चाहिए। हमारी इच्छाएँ असीमित और सपने अनंत है। इन सभी भौतिक वस्तुओं को एकत्र करते हुए हम जीवन की वास्तविक खुशियों को भूल जाते हैं। और लालचवश संग्रहित वस्तुओं का उपभोग नहीं कर पाते।
3. **क.** बड़ी बहन का विवाह कस्बे में एक सौदागर से हुआ था।

   ख. बड़ी बहन ने अपने फैंसी कपड़े और स्वादिष्ट खाने-पीने की चीज़ें और तमाशे-थियेटर, बाग-बगीचे आदि की तारीफ की।

   ग. छोटी बहन ने बड़ी बहन से अपनी जिंदगी की अदला-बदली से इंकार कर दिया और कहा कि सीधे-सादे और रूखे से रहते है तो क्या चिंता-फिक्र से तो छूटे रहते हैं। किसानी जिंदगी लंबी तथा तंदरुस्ती वाली होती है।

भाषा की बात.....

1. तारीफ़ – परिचय तंदुरुस्ती – स्वास्थ्य दरिया – नदी
   जमघट – भीड़ मुखातिब – जिससे कुछ कहा जाए टेकड़ी – टीला
   जवाब – उत्तर मुकाम – जगह, स्थान निगाह – नजर
2. आई × गई जीवन × मृत्यु पसंद × नापसंद
   स्वीकार × बहिष्कार पक्का × कच्चा आसान × मुश्किल
   तिरछी × सीधी अँधेरा × उजाला
3. अदला-बदली, जगह-जगह, सीधे-सादे, करते-करते
4. **क.** शहर के तमाशे-थियेटर, बाग-बगीचे देखने लायक है।

   ख. दीना के मन में अधिक जमीन खरीदने की चाह जगी।

ग. दरिया के पास, ज़मीन ही ज़मीन थी।

घ. दीना ने पूछा ज़मीन की कीमत क्या होगी?

ङ. अरे! इतनी ही ज़मीन क्या थोड़ी है?

बाल-लीला

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (iii); **ग.** (iv); **घ.** (ii)
2. **क.** यशोमति माँ की अभिलाषा है कि कब कृष्ण (मेरा लाल) घुटनों के बल चलेंगे और कब धरती पर कदम रखेंगे, कब उनके दूध के दाँत दिखेंगे और कब तोतला बोलेंगे। नंद बाबा को वे कब बाबा तथा यशोमति माँ को मैया कहकर बुलायेंगे। कब माँ का आँचल पकड़कर वे माँ से झगड़ा करेंगे। कब वे अपने हाथों से छोटे-छोटे कौर खायेंगे।

   ख. अपनी हठ पूरी ने होने पर कृष्ण माँ यशोदा को कहते हैं कि वे उनकी गोदी में नहीं आयेंगे, गाय का दूध नहीं पियेंगे और अपनी चोटी नहीं गुथवायेंगे। वे नंद बाबा के पुत्र तो होगे परंतु यशोमति माँ के पुत्र नहीं कहलायेंगे।

   ग. अंतिम पद में कहा गया है कि कृष्ण कभी अपने प्रतिबिंब को खंबे में देखकर उसे माखन खिलाते हैं तथा कभी स्वयं माखन खाते है इसे देखकर यशोदा माँ हर्षित होती है।

   घ. बाल कृष्ण हाथ में थोड़ा-सा मक्खन लेकर कुछ अपने मुँह में डालते हैं और कुछ खंभे में दिखने वाले अपने प्रतिबिंब (परछाईं) को खिलाते हैं।
3. **क.** यशोदा माँ की अभिलाषा है कि कब कृष्ण उनसे हँसकर बात करेगा जिसकी छवि उनका मन मोह लेगी।

   ख. कृष्ण कहते हैं कि मैं नंद बाबा का तो पुत्र कहलाऊँगा परंतु तुम्हारा पुत्र नहीं कहलाऊँगा यदि मेरी हठ पूरी नहीं हुई तो।

   ग. कृष्ण अपना हाथ उठाकर काली सफेद गायों को बुला रहे हैं।

   घ. बाल कृष्ण हाथ में थोड़ा-सा मक्खन लेकर खंभे में दिखने वाले अपने प्रतिबिंब (परछाईं) को खिलाते हैं।
4. **संदर्भ :** प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य पुस्तक 'नायरा' के पाठ-13 'बाल-लीला' नामक पाठ से ली गई है। इसके कवि 'सूरदास' जी हैं।

   प्रसंग : प्रस्तुत पद में कृष्ण के बाल हठ और बाल सुलभ धमकी का सरस और सटीक वर्णन है।

   व्याख्या : श्री कृष्ण कह रहे हैं, ''मैया! मैं तो यह चंद्रमा-खिलौना लूँगा। यदि तू इसे नहीं देगी तो अभी जमीन पर लोट जाऊँगा, तेरी गोद में नहीं आऊँगा। न तो गैया का दूध पीऊँगा, न सिर में चुटिया गुँथवाऊँगा। मैं अपने नंद बाबा का पुत्र बनूँगा, तेरा बेटा नहीं कहलाऊँगा।'' तब मैया यशोदा हँसती हुई समझाती है और कहती है ''आगे आओ! मेरी बात सुनो, यह बात तुम्हारे दाऊ भैया को मैं नहीं बताऊँगी। तुम्हें मैं नई दुल्हनिया लाकर दूँगी।'' यह सुनकर कृष्ण कहने लगे ''तू मेरी मैया है, तेरी शपथ सुन! मैं इसी समय ब्याह

करने जाऊँगा।'' सूरदास जी कहते हैं प्रभु! मैं आपका कुटिल बाराती बनूँगा और आपके विवाह में मंगल के सुंदर गीत गाऊँगा।

भाषा की बात.....

1. जसुमति – यशोमति तोतरैं – तोतला आउ – आओ
   काहैं – क्यों मोसौं – मुझे छबि – छवि
   लैहौं – लूँगा सौं – सौगंध मनही – मन में
2. बचन – वचन छबि – छवि स्याम – श्याम
   चंद – चाँद जसुमति – यशोदा दुलहिया – दुल्हन
   बियाहन – शादी करना माखन – मक्खन हरष – हर्ष
   चरित – चरित्र नित – रोज चरन – चरण
3. धरती – धरा, जमीन, भू जननी – माता, माँ, मातृ
   सुत – पुत्र, बेटा, वत्स घर – गृह, भवन, मकान
   पिता – जनम, तात, बाप धेनू – गाय, गौ, रोहिणी
4. कल – बीता हुआ दिन, मशीन हरि – विष्णु, कृष्ण
   पट – कपड़ा, दरवाज़ा काम – कार्य, कामदेव
   गौ – गाय, स्वर्ग सुरभि – सुगंध, वसंत
5. चंद – खिलौना (रुपक अलंकार)
   तनक-तनक चरननि सौ नाचत, मनही मनहि रिझावत (अनुप्रास)

मेट्रोमैन श्रीधरन

लिखित कार्य

1. **क.** (iii); **ख.** (i); **ग.** (ii); **घ.** (i)
2. **क.** केंद्र सरकार ने रेलवे को सलाह दी—अगले छह माह में पुल फिर से काम के योग्य बना दिया जाए। रेलवे ने अपने युवा इंजीनियर इलातुवलापिल श्रीधरन को यह कार्य सौंपते हुए निर्देश दिया कि पुल को तीन महीने में तैयार कराना है। काम के धुनी श्रीधरन ने पुल का निर्माण 46 दिनों में पूरा करके सबको आश्चर्यचकित कर दिया। इस अविश्वसनीय कारनामे के लिए रेलवे ने अपने इस युवा इंजीनियर को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया।

   श्रीधरन जी की बेजोड़ कार्यशैली का यह इकलौता उदाहरण नहीं है। असंभव लगने वाले काम को समय सीमा से पहले और अनुमानित लागत से कम में पूरा करने का वह सिलसिला आज भी जारी है।

   ख. भारत की पहली मेट्रो रेल परियोजना के निर्माण के दौरान श्रीधरन को अहम जिम्मेदारी सौंपी गई। अपनी तरह की इस पहली सार्वजनिक परिवहन सेवा की योजना बनाने, उसे डिजाइन करने और योजना को कार्यरूप देने में श्रीधरन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पहली मेट्रो सेवा के लिए कोलकाता को चुना गया। ज़मीन के नीचे कब सुरंगें बनीं, वहाँ से निकला मलबा कब, कहाँ गया, यह तो कोलकाता के लोग तक नहीं जान पाए। सबने एक दिन दूरदर्शन पर जो देखा वह यह था कि बंगाल की सभी प्रमुख विभूतियाँ मेट्रो के डिब्बे से खुशी-खुशी बाहर आ रही हैं। यही है श्रीधरन की कार्यशैली।

ग. केंद्र सरकार कोंकण को रेल लाइन से जोड़ना चाहती थी। 760 किलोमीटर लंबी इस रेल लाइन पर 150 पुलों और 93 सुरंगों का निर्माण होना था। असंभव लगने के कारण यह योजना कई बार टल चुकी थी। यह काम श्रीधरन को सौंपा गया। इसके लिए भारतीय रेल ने पहली बार 'बनाओ, चलाओ और वापस करो' (बिल्ट, ऑपरेट एंड ट्रांसफ़र) जैसी नई प्रशासनिक व्यवस्था लागू की। अपनी तरह की अनोखी और विशेष मानी जाने वाली इस परियोजना को श्रीधरन ने सात साल में पूरा करके एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया।

घ. श्रीधरन ने सबसे पहले तो अपनी कार्यशैली से इसी पहलू पर चौंकाया। दिल्ली मेट्रो ट्रैक के निर्माण के लिए कहीं ज़मीन के सैकड़ों फुट नीचे तो कहीं ज़मीन से दर्जनों फुट ऊपर निर्माण कार्य चलता रहा, ज़मीन के नीचे सुरंग बनाने के लिए मीलों खुदाई हुई। सुबह ऐसी किसी भी सड़क पर एक मुट्ठी मिट्टी भी पड़ी दिखाई नहीं दी, जिसके नीचे रात को ट्रकों मिट्टी खोदी गई होगी। यही हाल ज़मीन के ऊपर के हिस्से का हुआ। पुलों के निर्माण के लिए बड़े-बड़े खंभे, पटरी बिछाने वाले अधबने पुल, मज़दूर आदि भी आते रहे और वाहन भी अपने रास्ते पर पहले की तरह आते-जाते रहे।

किसी को परेशानी में डाले बिना अपने काम को अंजाम देना, सहकर्मियों में भी काम के प्रति लगन और निष्ठा पैदा करना श्रीधरन की कुछ विशेषताएँ हैं जो उन्हें विशिष्ट और अनुकरणीय बनाती हैं। इनके इन्हीं आदर्शों का परिणाम यह होता है कि सरकारी क्षेत्र में होने के बावजूद वे योजनाएँ समय से पहले और निर्धारित लागत से कम में पूरी भी होती हैं और उच्चकोटि की भी होती हैं।

ङ. श्रीधरन का गृहराज्य उनकी अद्‌वितीय सेवाओं से लाभ उठाने का अवसर नहीं गँवाना चाहता था। केरल सरकार ने उनके निवास पर ही एक दफ़्तर बनाकर कोच्चि मेट्रो रेल परियोजना का काम सौंपने में ज़रा भी देर नहीं लगाई।

3. **क.** श्रीधरन के गृहराज्य का नाम केरल है।

   ख. गृहराजय ने उन्हें कोच्चि मेट्रो परियोजन का काम सौंपा।

   ग. श्रीधरन इन दिनों अपनी सासु-माँ की सेवा के साथ कोच्चि रह रहे हैं।

भाषा की बात.....

1. इत – मोहित प्रचलित प्रमाणित परजित
   इक – दैनिक वैवाहिक मासिक साप्ताहिक
   इन – पुजारिन नागिन मालकिन धोबिन

2. श्रीधरन – श् + र् + ई + ध् + अ् + र् + अ + न् + अ
   व्यवधान – व् + य् + अ + व् + अ + ध् + आ + न् + अ

स्वास्थ्य – स् + व + आ + स् + थ् + य् + अ

यात्रियों – य् + आ + त्र + इ + य + ओ + अं

रामेश्वर – र + आ + म + ए + श् + व् + अ + ए + अ

3. **क.** वाह!; **ख.** वरना; **ग.** अब; **घ.** बाहर; **ङ.** के बिना; **च.** के साथ; **छ.** पहले से; **ज.** मत; **झ.** अरे!

4. **क.** विश्वासघाती; **ख.** वर्णनीय; **ग.** अद्वितीय; **घ.** स्मरणीय; **ङ.** पारदर्शी

गोवा की सैर

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (ii); **ग.** (iii); **घ.** (ii); **ङ.** (iii)

2. **क.** कोंकण क्षेत्र में स्थित गोवा सन् 1987 में भारत का 25वाँ राज्य बना। इसके उत्तर में महाराष्ट्र, पूर्व और दक्षिण में कर्नाटक तथा पश्चिम में अरब महासागर है। इसका क्षेत्रफल 3702 वर्ग किमी है। उत्तर से दक्षिण की ओर इसकी लंबाई 105 किमी तथा पूर्व में सह्याद्रि पर्वत से पश्चिम में सागर तक चौड़ाई लगभग 60 किमी है।

   गोवा में अनेक पहाड़ और पहाड़ियाँ हैं, जिनमें साँसागोड़, कटलांची, माउली, वाघेर, मोलेगढ़, मोरपिल्ला, सिद्धनाथ, चंद्रनाथ और दूधसागर अधिक प्रसिद्ध हैं। सबसे ऊँचा पर्वत साँसागोड़ है।

   ख. प्रचुर वर्षा के कारण गोवा वन-संपदा से संपन्न है। आम, कटहल, नारियल, काजू, मिर्च-मसाले, सुपारी, पान, केला, चावल, पपीता, शकरकंद आदि यहाँ खूब मिलते हैं। आमों में मालकुराद, अल्फांसो, मानसिराट, मालकेश प्रसिद्ध हैं। यहाँ काजू से उर्राक और फेनी शराब बनाई जाती हैं।

   ग. मिट्टी के बरतन, नारियल के छिलकों की रस्सी, चटाई, मछली पकड़ने का जाल, बाँस की टोकरियाँ और सोने-चाँदी के आभूषणों के लघु उद्योग हैं।

   घ. गोवा में ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार सन् 1542 में सेंट फ्रैंसिस जेवियर ने प्रारंभ किया। सेंट जेवियर का शव आज भी प्राचीन गोवा के एक प्राचीन गिरजाघर में दर्शनार्थ शीशे में रखा हुआ है। यहाँ के ईसाई रोमन कैथोलिक हैं और इन सभी के हिंदू पूर्वजों का किसी न किसी समय धर्मांतरण हुआ था।

   ङ. गोवा के लोग नृत्यकला, चित्रकला और संगीत के प्रेमी हैं और यहाँ के अनेक संगीतज्ञ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। यहाँ के प्रसिद्ध लोकगीत मांडो, धुलपद, दाकणी, ओवीधालो और फुगड़ी हैं जिनमें ग्रामीण अंचल की झलक मिलती है एवं विभिन्न अवसरों पर गाए जाते हैं। ओवीधालो विवाहगीत, दाकणी नाट्यगीत और मांडो एक प्रेमगीत है। कुनबी गीत तबला, ढोलक, सिंबल के साथ गाया जाने वाला युगल गीत है। महाराष्ट्र का लावणी लोकगीत भी यहाँ प्रचलित है। हिंदुओं का 'जागोर', जिसमें संगीत और नाटक का मिश्रण होता है; ईसाइयों में 'तियाम' कहा जाता है।

4.

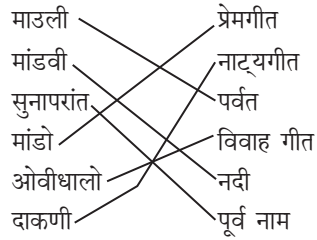

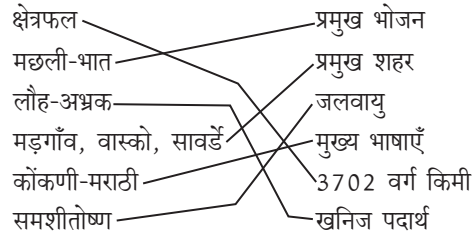

भाषा की बात.....

1. सह्याद्रि – सह + आद्रि (दीर्घ संधि)
बाणावली – बाण + वली (दीर्घ संधि)
धर्मांतरण – धर्म + अंतरण (दीर्घ संधि)
विद्यालय – विद्या + आलय (दीर्घ संधि)
शीतोष्ण – शीत + उष्ण (यण संधि)
धर्मावलंबी – धर्म + अवलंबी (यण संधि)
महोत्सव – महा + उत्सव (गुण संधि)
उल्लेख – उत् + लेख (व्यंजन संधि)

2. वन संपदा – वन की संपत्ति (तत्पुरुष)
अघनाशिनी – पाप का नाश करने वाली (कर्मधारय)
संगीतप्रेमी – संगीत को प्रेम करने वाला (कर्मधारय)
लोकगीत – लोक (जनता) का गीत (तत्पुरुष)
जीवनदर्शन – दर्शन हो जो जीवन का (कर्मधारय समास)
समुद्रतट – समुद्र का तट (तत्पुरुष)

3.

	मूल शब्द	**प्रत्यय**		**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
स्थानीय –	स्थान	ईय	भारतीय –	भारत	ईय
आकर्षित –	आकर्ष	इत	विदेशी –	विदेश	ई
प्राकृतिक –	प्राकृत	इक	पराजित –	पराज	इत
प्रारंभिक –	प्रारंभ	इक	दर्शनीय –	दर्शन	ईय

4. **क.** यहाँ काजू से उर्राक और फेनी से शराब बनाई जाती है।
ख. गोवा की राजधानी पणजी है।
ग. महाराष्ट्र का लावणी लोकगीत भी यहाँ प्रचलित है।

देश के लाल हठीले

लिखित कार्य

1. **क.** 'मेरे देश के लाल' से कवि का संकेत देश के सिपाही की ओर है।
   ख. जियो शान से मरो शान से किसी के आगे शीश न झुकाओ इस तरह जिया जा सकता है।
   ग. अहिंसा का पानी के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि हमारे देश की महिला हँसते-हँसते अपनी मांगे पोंछ देती है और हृदय में धैर्य और शान्ति रखती हैं।
   घ. कौमी गानों को सुनकर देश के जवानों में जोश भर जाता है और हृदय में देश प्रेम की भावना जाग जाती है।
   ङ. क्योंकि भारत में धरमी को अपनी माँ मानते हैं, इसलिए लोग मर मिटते हैं।
2. **क.** सुख-समृद्धि से भरपूर
   ख. हीरा पन्ना, मणिक से है पटी
   ग. हमारे देश में सुख-समृद्धि भरपूर भरी हुई है।
   हमारा देश हीरा पन्ना, मणिक, जैसे लाल से भरा है।
   हमारा देश का झण्डा ऊँचे पर्वत पर लहराता है।

भाषा की बात.....

1.

दूध	–	दुग्ध	क्षीर	धरती	–	धरा	अनंता
हिमालय	–	हिमपति	हिमगिरि	मेघ	–	बादल	जलज
पानी	–	जल	नीर	माँ	–	माता	जननी
शीश	–	सिर	मुंड	विश्व	–	संसार	जग

2.

उच्च	×	नीच	धरती	×	आसामन	आज़ादी	×	कैद
शांति	×	अशांति	अहिंसा	×	हिंसा	हँसते	×	रोते
मरना	×	जीना	अपना	×	पराया	पीठ	×	छाती

3.

क. रंग		मेरी कार लाल रंग की है।
	सुपुत्र	राम दशरथ के सुपुत्र थे।
ख. माँग भरना		स्त्रियाँ सिन्दूर से अपनी मांग भरती है।
	माँगना	मोहन अपने पिता से सम्पत्ति में अपना अधिकार मांगाता है।
ग. मानना		हमें बड़ों की आज्ञा माननी चाहिए।
	सम्मान	हमें अपने से बड़ों का सम्मान करना चाहिए।
घ. आने वाला कल		मुझे तो बहुत डर लग रहा है। कल मेरी परीक्षा का परिणाम आने वाला है।
	बीता हुआ कल	कल वो मेरे घर आया था।

सुभागी

लिखित कार्य

1. **क.** (ii); **ख.** (ii); **ग.** (i); **घ.** (ii)
2. **क.** सुभागी एक बहुत ही समझदार और मेहनती लड़की थी, माता-पिता की सेवा करती थी।
   ख. क्योंकि रामू अपने पिता के साथ रहना नहीं चाहता था उन्हें परेशान करता था।
   ग. सुभागी ने माँ-बाप का क्रिया-कर्म इसलिये किया क्योंकि माता-पिता की इच्छा थी और कर्ज लेकर क्रिया-कर्म किया।
   घ. रामू और उसकी स्त्री माँ-बाप की इज्जत नहीं करते थे। दुर्व्यवहार करते थे।
   ङ. अंत में सजनसिंह ने सुभागी के सामने अपने घर की बहु बनने का प्रस्ताव रखा।
   च. सुभागी एक बहुत ही नेक लड़की थी। वह अपने माता-पिता की बहुत सेवा करती थी। वह बहुत ही मेहनती थी मेहनत करके उसने सारा कर्ज चुकााया।
3. **क.** रात को तुलसी लेटे तो वह पुरानी बात याद आई, जब रामू के जन्मोत्सव में उन्होंने रुपये कर्ज लेकर जलसा किया था, और सुभागी पैदा हुई, तो घर में रुपये रहते हुए भी उन्होंने एक कौड़ी न खर्च की। पुत्र को रत्न समझा था, पुत्री को पूर्व जन्म के पापों का दंड। वह रत्न कितना कठोर निकला और यह दंड कितना मंगलमय?
   ख. बँटवारा होते ही महतो और लक्ष्मी को मानो पेंशन मिल गई। पहले तो दोनों सारे दिन, सुभागी के मना करने पर भी कुछ-न-कुछ करते ही रहते थे, पर अब उन्हें पूरा विश्राम था। पहले दोनों दूध-घी को तरसते थे। सुभागी ने कुछ रुपये बचाकर एक भैंस ले ली। बूढ़े आदमियों की जान तो उनका भोजन है।
   ग. 'सजनसिंह के कर्ज उतारने का व्रत पूरा हो गया है।' की ओर संकेत किया है।

भाषा की बात.....

1. आसरा – आश्रय पाँव – पाद कपूत – कुपुष
   दाँत – दन्त घर – गृह गाँव – ग्राम
   जनम – जन्म कान – कर्ण मुँह – मुख
2. पक्का धक्का चक्की
   बच्चा बल्ला मक्का
3. **क.** नौकर से समान नहीं बेचा गया।
   ख. डाकुओं द्वारा खजाना लूट लिया गया।
   ग. बाबू से मेरे आवेदन पर हस्ताक्षर नहीं किए गए।
   घ. उन लोगो के द्वारा आन्दोलन छेड़ा गया।
   ङ. माँ के द्वारा बिस्तर बिछा दिया गया।
4. **क.** जब वह स्टेशन पहुँचा, गाड़ी चली गई।
   ख. जब हम शिमला पहुँचे, बरफ गिरने लगी।
   ग. जब उसने टी०वी० खोला, बिजली चली गई।
   घ. जब सोनू ने पैन चुराया, अध्यापक ने देख लिया।
   ङ. जब डॉक्टर ने दवा दी, रोहन का बुखार उतरा।

5. वह लड़का कल आयेगा। — वह लड़की कल रो रही थी।
   मेरा भाई घर पहुँच गया है। — वह अध्यापक सभी विद्यार्थियों के प्रिय है।

6. **क.** अचेत होकर गिरना
   उपवास के दिन कड़ी धूप में बाजार में शॉपिंग करने गई रिद्धी गश खाकर गिर गई।

   ख. सीमा से बहार की बात होना
   सुरेश पहलवान को कुश्ती में हारने का दावा करने वाले रमेश ने बूते से बाहर की बात कर डाली।

   ग. इतना अधिक क्रुध होना कि संयम जाता रहे
   जैसे ही प्रधानाध्यापक ने छात्रों को अनुशासनहीनता करते देखा तो वह अपने आपे से बाहर हो गये।

   घ. भयभीत हो जाना या घबरा जाना
   रोहन को अपनी इज्जत बचानी थी इसलिए वह चोर के पीछे भागा, चोर के सामने जैसे ही पहुँचा, उसने रोहन को चाकू दिखाया, चाकू देखकर रोहन के हाथ-पाँव ठंडे हो गए।

   ङ. दंग रह जाना
   रणभूमि में अभिमन्यू का पराक्रम देखकर कौरवों ने दाँतों तले उँगली दबा ली।

   च. अच्छे होने का नाटक करना।
   कविता बात-बात पर अपना त्रियाचरित्र दिखाती थी।

   छ. अतिप्रिय होना
   वह अपने बेटे को हमेशा अपने गले से बांधकर रखती थी।

गोशाला

लिखित कार्य

1. **क.** रामदीन काका धनी होकर भी मनुष्यता की कसौटी पर खरे नही उतरे क्योंकि रामदीन का जीवन भर कार्य किया बूढ़ा होने पर अक्कल की कोई मदद नहीं की।

   ख. यह तो अक्कल है!—"कहाँ चले अक्कल?"
   "गाँव में अब गुज़र नहीं होता, बबुआ! जा रहा हूँ। कहीं माँग-माँगकर खाऊँगा और राम-नाम लेते।"

   ग. अक्कल ने कथा सुनाई। किस तरह ज़िंदगी की उठान के समय उसने अपनी पूरी शक्ति से रामदीन बाबू की मज़दूरी की, किस तरह उनकी कितनी ही परती ज़मीन को उसने हरा-भरा खेत बना डाला, किस तरह उसने उनके पशुधन की वृद्धि की, किस तरह उसने उनके मकान बनाए, जिन पर पड़ोस के बड़े-बड़े लोगों को ईर्ष्या होती है, लेकिन....
   लेकिन और बातें जाएँ जहन्नुम में, अक्कल के साथ महान अन्याय किया गया था। जाड़े के दिन। न घर, न कपड़ा। रामदीन काका के दरवाज़े पर एक बड़ा 'घूर' लगता है। बेचारा अक्कल दिनभर भीख माँगता, रात में उनके पुआल के टाल में घुसकर सो जाता और जब कभी जाड़ा लगता, उनके घूरे में जाकर आग तापता, किंतु आज रामदीन काका ने उसे वहाँ से निकाल दिया है। क्यों? क्योंकि वह रातभर तापकर आग खत्म कर देता है।

''बाबू! ज़िंदगीभर उनकी सेवा की। इस बुढ़ापे में खाना-पीना, कपड़ा-लत्ता, घर-दुआर देने से रहे, क्या घूरे की आग से भी मुझे महरूम किया जाना चाहिए?''

घ. अक्कल अब बूढ़ा हो गया था अब उससे काम-काज नहीं होता था इसलिए गाँव में गुजारा नहीं हो पा रहा था। इस कारण गाँव छोड़ने का निर्णय लिया।

2. **क.** गाँव के रामदीन काका कीचड़ में सने, सिर पर छाता ओढ़े, लेकिन ज़्यादातर भीगते, बढ़े जा रहे हैं—मेरे पड़ोसी अक्कल के दरवाज़े की ओर!

ख. ''अक्कल! ज़रा चलो, भानसघर का खपरैल उधड़ जाने से समूचा घर पानी-पानी हो रहा है, खाना-पीना बंद है। चलो! ज़रा खपरैलों को दुरुस्त कर दो, बाल-बच्चे भूख से छटपटा रहे हैं।''

ग. रामदीन काक की इस बात से अक्कल को चिढ़ थी कि कंजूसी के मारे अच्छे दिनों में ये घर दुरुस्त नहीं कराते और इस आफत में जान लेने आए हैं।

घ. उसे सरदी लग गई थी, वह रह-रहकर खाँसता था, यह बात तो हम पड़ोसी जानते ही थे।

ङ. रामदीन काका के साम-दाम-दंड-भेद के सामने उसे झुकना पड़ा।

3. **क.** लोग अक्कल की खुशामद इसलिए करते थे कि वह बहुत मेहनती और हरफनमौला इंसान था।

ख. गाँव में साधु-संतों के आने पर अक्कल उनकी सेवा करता था।

ग. दो बेटे और एक बेटी।

घ. अक्कल दीवार बनाने, छप्पर बनाने आदि में कुशल था। वह गाँव में सभी तरह का काम करता था।

ङ. शहर में गोशाला बूढ़ी, अपाहिज गायों, बैलों की रक्षा के लिए बनवाई गई थी।

भाषा की बात.....

1.

मूलावस्था		**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
अधिक	—	अधिकतर	अधिकतम
सुंदर	—	सुंदरतर	सुन्दरतम
लघु	—	लघुत्तर	लघुत्तम
उच्च	—	उच्चतर	उच्चतम
निम्न	—	निम्नतर	निम्नतम

2.

भाववाचक संज्ञा		**विशेषण**	**भाववाचक संज्ञा**		**विशेषण**
उदारता	—	उदार	भूख	—	भूखे
चतुराई	—	चतुर	प्यास	—	प्यासा
कठोरता	—	कठोर	मूर्खता	—	मूर्ख
उत्कृष्टता	—	उत्कृष्ट	बुढ़ापा	—	बूढ़ा

3.

विग्रह	**समास**
क. खाना, पीना आदि	द्वंद्व
ख. हर दिन	अव्ययी भाव

ग. पेट भर कर — अव्ययी भाव

घ. भूख से भरा हुआ — अव्ययी भाव

ङ. आराम के लिए कुर्सी — सम्प्रदान तत्पुरुष

च. कपड़ा और लत्ता — द्वंद्व

छ. व्यवहार से कुशल — करण तत्पुरुष

4. **क.** सर्वगुध सम्पन्न; **ख.** परती; **ग.** खिचड़ी; **घ.** अलाव

5. **क.** बहुत भूख लगना

उसने सुबह से कुछ नहीं खाया इसीलिए वो भूख से छटपटा रही है।

ख. घृणा करना

राधा अपनी सहेली से मन-ही-मन चिढ़ती थी।

ग. अतिप्रिय होना

आज्ञाकारी बच्चा माँ बाप की आँखों का तारा होता है।

सरस्वती पाठशाला

लिखित कार्य

1. **क.** (ii); **ख.** (ii); **ग.** (iii)

2. **क.** जिन मास्टर साहब ने यह मेडल दिया था, वह पूरे अंग्रेज़ भक्त थे। वह खूँखार मुद्रा में रहते थे। जिस दिन मेडल बँटे थे, उस दिन ज़रूर मुसकराए थे। इसके कुछ दिन बाद ही सरस्वती पाठशाला का नाम बदलकर राष्ट्रीय सरस्वती पाठशाला हो गया।

ख. सरस्वती पाठशाला की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। पाँचवाँ दरज़ा पास करने के बाद अपने भाई के साथ मैं भी मैकडलन हाई स्कूल आ गया, लेकिन सरस्वती पाठशाला के राष्ट्रीय होने के बाद दो वर्षों तक वहाँ के वातावरण ने मन पर एक अमिट छाप छोड़ दी थी। वैसा वातावरण फिर न मिला।

ग. ''प्रशंसा सुनकर मुझे अभिमान हो जाएगा। मैं घटिया मूर्तियाँ बनाने लगूँगा। आप फिर भी बढ़िया बनाते रहेंगे।''

घ. राष्ट्रीयता की लहर ने छात्रों और अध्यापकों के संबंध एकदम बदल दिए थे। अनुशासन की समस्या जैसी कोई चीज़ न रह गई थी।

ङ. मैंने उनकी चमकती हुई आँखों की तरफ़ देखकर कहा, ''प्रशंसा सुनकर मुझे अभिमान हो जाएगा। मैं घटिया मूर्तियाँ बनाने लगूँगा। आप फिर भी बढ़िया बनाते रहेंगे।''

3. **क.** लेखक को इस बात का विश्वास था कि सबसे अच्छे खिलाड़ी हमारे स्कूल में हैं। हरनारायण और गंगाधर जहाँ गेंद फेकने वाले हों, वहाँ किसी भी टीम का जीतना दुश्वार था।

ख. हरनारायण शहर के सबसे तेज़ दौड़ने वालों में थे। गेंद फेंकने से पहले सिर्फ़ तीन डग दौड़ते थे और इतने ज़ोर से फेंकते थे कि खेलने वाला अजनबी होने पर अचकचा जाता था।

ग. लहीम-शहीम आकार वाले सिंह भीमप्रताप सिंह 'यथा नाम तथा गुण' फुटबॉल के बहुत अच्छे खिलाड़ी थे।

भाषा की बात.....

1. इज्जत – इज़्ज़त फनकार – फ़नकार फकीर – फ़कीर
   जमीन – ज़मीन मजहब – मज़हब मंजिल – मंज़िल
   टेलीफोन – टेलीफ़ोन जरा – ज़रा टेलीविजन – टेलीविज़न
2. आकार – निराकार मान – अपमान वाद – विवाद
   सुंदर – असुंदर पुत्र – सुपुत्र रूप – कुरूप
   काबू – बेकाबू शासन – दुसशासन अंत – अनंत
   वाद – अपवाद कृति – आकृति जुबान – बेजुबान
3. कक्षा शिक्षकों प्रतिज्ञा त्रिपाठी
   स्वागताध्यक्ष मित्र चित्र छात्रों

पूर्व चलने के बटोही....

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (ii); **ग.** (iii)
2. **क.** मनुष्य के जीवन में विभिन्न पड़ाव आते हैं। सुख-दुख का मिलन होता रहता है। वही मनुष्य सफल होता है। जो बिना घबराए निरंतर चलता रहता है। उसे इन व्यर्थ विचारों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।
   ख. एक अच्छे पथिक की पहचान है कि उसे चलने से पहले मार्ग की पहचान करके अपने पर विश्वास करके आगे बढ़ना चाहिए।
   ग. कविता के माध्यम से कवि ने यह संदेश दिया है कि यदि एक रास्ता असंभव लगे तो दूसरा रास्ता चुनकर आगे बढ़ते रहना चाहिए और चलने से पहले मार्ग की पहचान कर ले।
4. **क.** अनगिनत राही गए इस राह से उनका पता क्या
   ख. हर सफल पंथी यही विश्वास ले इस पर खड़ा है।
   ग. है अनिश्चित कब सुमन कब कंटको के शर मिलेंगे।
   घ. किस जगह यात्रा खत्म हो जाएगी यह भी निश्चित है।

भाषा की बात.....

1. ज्ञात × अज्ञात अर्थ × शब्द संभव × असंभव
   अनगिनत × गणित सफल × असफल निश्चित × अनिश्चित
   विश्वास × अविश्वास अच्छा × बुरा कंटक × सुमन
2. अन — अनजान अनर्थ अनादि
   अनु — अनुशासन अनुसार अनुचित
   अ — असफल असंभव अज्ञात
3. **क.** रचयिता; **ख.** राहगीर; **ग.** अनगिनत; **घ.** मूक; **ङ.** अनिश्चित

6 सदानीरा गंगा

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (ii); **ग.** (i); **घ.** (iii)
2. **क.** कंठहार के रूप में सुशोभित होने वाली पुण्य सलिला गंगा को इस पृथ्वी लोक पर महाराज भगीरथ ने उतारा था। उनकी कठिन तपस्या, कठोर साधना और एकनिष्ठ भक्ति के सम्मुख महादेव भी बेबस हो गए और अपनी जटाओं में रहने वाली गंगा को मानव-जाति के उद्धार के लिए पृथ्वी पर उतारा। ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई। उस दिन से प्रतिवर्ष 'गंगा-दशहरा' का पुण्य पर्व मनाया जाता है और यह पुण्य सलिल गंगा 'देवनदी' से भारतवासियों की 'गंगा-माँ' बन गई।

   ख. गंगोत्री के कंठ से निःसृत होकर संपूर्ण भारत को जीवन-संगीत सुनाती हुई यह निरंतर पतितों के उद्धार में संलग्न है।

   ग. गंगा की तीव्र जलधारा में रॉफ्टिंग, कैनोइंग और क्याकिंग जैसे साहसिक खेल भी इसके जल में खेले जाते हैं।

   घ. लोग इसके जल में स्नान कर स्वयं को पाप-मुक्त मानते हैं। गंगाजल के बिना पूजा-अर्चना संपूर्ण नहीं होती। 'मकर संक्रांति', 'कुंभ', 'गंगा दशहरा' आदि ऐसे अनेक पर्व हैं जो इसके तटों पर मनाए जाते हैं। सुबह-शाम गंगा-मैया की आरती कर दीपदान किए जाते हैं तथा अनगिनत वरदान माँगे जाते हैं।

   ङ. 'देहरादून वन अनुसंधान संस्थान' ने गंगा-स्वच्छता के लिए बहुत ही कारगर उपाय सुझाया है। विशेषज्ञों ने सुझाव दिए हैं कि गंगोत्री से गंगासागर तक गंगा के किनारे वनस्पति लगाकर राष्ट्रीय नदी गंगा की स्वच्छता में अहम योगदान दिया जा सकता है।

   च. लगभग 200 किलोमीटर का पहाड़ी रास्ता तय करने के पश्चात गंगा ऋषिकेश होते हुए हरिद्वार में मैदान का स्पर्श करती है।
3. **क.** गंगा क्षेत्र में रहने वाली करोड़ों की आबादी अपने जीवन और जीविका के लिए गंगा पर निर्भर है।

   ख. गंगा का उद्गम स्थल गंगोत्री हिमनद उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में स्थित है।

   ग. विकास की अंधी दौड़ के कारण अपने उद्गम क्षेत्र 'गोमुख' से लेकर बंगाल की खाड़ी में मिलने तक सदानीरा गंगा पूरी तरह से प्रदूषित हो गई है।

भाषा की बात......

1. **क.** अधिकरण कारक; **ख.** कर्ता कारक; **ग.** करण कारक; **घ.** सम्प्रदान, अधिकरण कारक; **ङ.** सम्बंध, संप्रदान कारक; **च.** सम्बोधक
2.

समास-विग्रह	समास का नाम
क. राजा और रानी	द्वंद्व समास
ख. गुण और दोष	द्वंद्व समास
ग. धूप और दीप	द्वंद्व समास
घ. चार राहों का समूह	द्विगु समास

ङ. नौ रत्नों का समूह — द्विगु समास

च. पाँव वटी का समूह — द्विगु समास

3. **क.** परिमाण; **ख.** परिमाण; **ग.** सार्वनामिक; **घ.** सार्वनामिक; **ङ.** संख्यावाचक

4.

	शब्द	उपसर्ग		मूल शब्द		प्रत्यय
ख.	प्रारंभिक	प्र	+	आरम्भ	+	इक
ग.	संलग्नता	सं	+	लग्न	+	ता
घ	संरक्षित	सं	+	रक्षा	+	इत

अपठित गद्यांश

क. वास्तव में समय जैसी मूल्यवान संपदा का भंडार होते हुए भी हम सदैव उसकी कमी का रोना रोते हैं, क्योंकि हम इस अमूल्य समय को बिना सोचे-समझे खर्च कर देते हैं।

ख. विकास की राह में समय की बरबादी ही सबसे बड़ी शत्रु है।

ग. जो व्यक्ति जीवन में समय का ध्यान नहीं रखता, उसके हाथ असफलता और पछतावा ही लगता है।

घ. जो व्यक्ति समय के महत्व को समझते हैं, वे विश्व इतिहास के पटल पर सदैव विद्यमान रहते हैं, अपनी छाप छोड़ जाते हैं।

बचपन की यादें

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (iii); **ग.** (ii); **घ.** (iii)

2. **क.** बचपन में लेखक को बाहरी दुनिया से अधिक मोह था क्योंकि वह बचपन से नौकरों की देखरेख में और प्रतिबन्ध रहे थे।

   ख. नौकर श्याम लेखक के पास लक्ष्मण रेखा इसलिए खींचता था कि हम लकीर से बाहर न जाए।

   ग. मैंने 'पाठशाला जाने वाला लड़का' के संबोधन से छुटकारा पाने का एक उपाय खोज निकाला था। मैंने अपने बरामदे के कोने में एक पाठशाला खोल दी जिसमें लकड़ी के गज मेरे छात्र थे। मैं हाथ में छड़ी लेकर उन गजों के सामने कुरसी पर शिक्षक बनकर बैठ जाता था। मैंने यह भी निर्धारित कर लिया था कि उन छात्रों में अच्छे और बुरे छात्र कौन-कौन हैं? मूर्ख, चतुर, सीधे और बदमाश कौन हैं? मैं उनमें से बदमाश छात्रों को बेंत लेकर पीटा करता था। मैंने अपने उन गूँगे छात्रों पर कितना अत्याचार किया था, यह बतलाने के लिए उनमें से अब कोई भी नहीं बचा है; क्योंकि उन लकड़ी की छड़ों के स्थान पर अब लोहे के सरिए लगा दिए गए हैं।

   घ. एक दिन हमारे घर में एक चोर पकड़ा गया। उस समय 'चोर कैसा होता है?' यह देखने की मुझे बड़ी इच्छा थी, इसलिए जहाँ पर चोर को रखा गया था, मैं डरते-डरते वहाँ गया। मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह भी एक आम आदमी जैसा आदमी है,

ङ. उस दिन कुश और लव की कहानी चल रही थी। हम तन्मय होकर कहानी सुन रहे थे। कहानी का अंत बहुत दूर था। बहुत देर हो गई थी। तभी एक नौकर मुझे सोने के लिए बुलाने आ पहुँचा। अतः ईश्वर ने कहानी जल्दी पूरी कर दी। इस जल्दबाजी से मुझे भी दुख हुआ।

3. **क.** लेखक के एक नौकर का नाम ईश्वर था।

ख. नौकर ईश्वर को रामायण व महाभारत की कहानियाँ सुनाया करता था।

ग. कुश और लव की कहानी चल रही थी। हम तन्मय होकर कहानी सुन रहे थे। कहानी का अंत बहुत दूर था। बहुत देर हो गई थी। तभी एक नौकर मुझे सोने के लिए बुलाने आ पहुँचा। अतः ईश्वर ने कहानी जल्दी पूरी कर दी। इस जल्दबाजी से लेखक को दुख हुआ।

भाषा की बात.....

1. निर्धन — निर्धनता संपन्न — संपन्नता वास्तविक — वास्तविकता
   आज़ाद — आजादी तन्मय — तन्मयता सीधा — सीधापन
2. स्वाभाविक — स्व दयालु — दया वास्तविक — वास्तव
   सुरक्षित — सुरक्षा जल्दबाज़ी — जल्दी शिक्षित — शिक्षा
3. **संधि-विच्छेद कर संधि का नाम लिखो :**

संधि-विच्छेद	संधि का नाम		संधि-विच्छेद	संधि का नाम
निर्धन — नि + धन	विसर्ग	संदेह — सम् + देह	व्यंजन
सज्जन — सत् + जन	व्यंजन	संसार — सम् + सार	व्यंजन
तन्मय — तत् + मय	व्यंजन	दुर्गुण — दुः + गुण	विसर्ग

4. **क.** वश में करना

सोहन अपनी माँ की मुट्ठी में है इसलिए वह सब काम अपनी माता से पूछकर करता है।

ख. अप्रसन्नता प्रकट करना

जिस इंसान को चटपटा और मसालेदार खाना खाने की आदत लग जाए वह फल और सब्जियों से नाक-भौ सिकोड़ने लगता है।

ग. पार न करने योग्य सीमा

मीना के भाई ने उसके लिए लक्ष्मण रेखा खींच दी, इसलिए वह तुमसे मिलने नहीं आ सकती।

5. **क.** मनचाहा; **ख.** अपरिचित; **ग.** श्रोता; **घ.** लेखक

पेड़ मत काटो

लिखित कार्य

1. **क.** (ii); **ख.** (i); **ग.** (iii); **घ.** (ii)
2. **क.** अपना शौक पूरा करने के लिए सुंदर लाल आस-पास के जंगलों से पेड़ों के बीज उठा लाता, उनसे पौध तैयार करता और फिर उन पौधों को लगा देता। उन्हें पानी देता और फिर वे छोटे-छोटे पौधे बड़े वृक्ष बन जाते।

ख. सुंदर लाल को पेड़-पौधों से इतना लगाव हो गया कि वे सब उसे परिवार के लोगों के समान ही दिखने लगे। उसने अपनी एक मित्र-मंडली तैयार की और उनमें पेड़-पौधों के प्रति स्नेह भावना जागृत की। उसका कहना था कि ये पेड़ हमारे माता-पिता के समान हैं। ये हमें छाया देते हैं, फल देते हैं और जिस प्रकार माँ अपने बच्चे के लिए सभी प्रकार के दुख सहन करती है, उसी प्रकार ये पेड़-पौधे भी धूप, वर्षा जाड़ा, धूल आदि सब अपने ऊपर सहकर हमें सुख देते हैं, हमारी रक्षा करते हैं। जब कभी कोई व्यक्ति हरा वृक्ष काटने लगता, तो उसे बड़ा कष्ट होता। उसे ऐसा लगता जैसे वह पेड़ नहीं, उसके शरीर का अंग काट रहा है।

ग. जब सुंदर लाला ने यह सुना कि वे लोग कंपनी के नौकर हैं और कंपनी ने जंगल काटने का ठेका ले रखा है। यही कारण था कि वे पेड़ काटना बंद नहीं कर सकते थे। यह जानकर उसे दुख भी हुआ और आश्चर्य भी। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि इस प्रकार इतने बड़े स्तर पर पेड़ों की कटाई भी हो सकती है।

घ. सुंदर लाल अपने गाँव लौटा, तो उसका मन आत्मग्लानि से भरा हुआ था। उस कंपनी के मज़दूरों को वृक्ष काटने से रोक नहीं सका था, यही उसकी आत्मग्लानि का मुख्य कारण था। उसने अपनी मित्र-मंडली की सभा बुलाई और उस सभा में गाँव के सभी लोगों को भी आमंत्रित किया। लोगों को पेड़-पौधों का महत्व समझाया और इस प्रकार लगातार पेड़ कटने से उत्पन्न होने वाले खतरे के बारे में बताते-बताते उसकी आँखें छलक पड़ीं।

ङ. उसने ये सभी पक्ष लोगों के सामने रखे। उसकी बातों को सुनकर लोगों को लगा कि वह ठीक कह रहा है। उन्हें उसका साथ देना चाहिए। यही नहीं, सुंदर लाल ने अपने मित्रों के साथ आस-पास के सभी गाँवों में अपनी यात्राएँ प्रारंभ की। सभाओं का आयोजन किया और लोगों को वृक्षों के महत्व तथा उनके कटने से सिर पर मँडरा रहे खतरे के बारे में सचेत किया। उसने इनके बारे में सरकार को अनेक पत्र लिखे। 'तरु-रक्षण' एवं 'वृक्षारोपण' संस्थान का गठन किया।

3. **क.** पेड़-पौधे नष्ट हो गए, तो पर्यावरण का संतुलन बिगड़ जाएगा।

   ख. वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से वर्षा नहीं हो पाएगी।

   ग. वर्षा न होने का परिणाम यह होगा कि लोग भूखों मरने लगेंगे।

4. पेड़-पौधों से इतना लगाव हो गया कि वे सब उसे परिवार के लोगों के समान ही दिखने लगे। उसने अपनी एक मित्र-मंडली तैयार की और उनमें पेड़-पौधों के प्रति स्नेह भावना जागृत की। उसका कहना था कि ये पेड़ हमारे माता-पिता के समान हैं। ये हमें छाया देते हैं, फल देते हैं और जिस प्रकार माँ अपने बच्चे के लिए सभी प्रकार के दुख सहन करती है, उसी प्रकार ये पेड़-पौधे भी धूप, वर्षा जाड़ा, धूल आदि सब अपने ऊपर सहकर हमें सुख देते हैं, हमारी रक्षा करते हैं। जब कभी कोई व्यक्ति हरा वृक्ष काटने लगता, तो उसे बड़ा कष्ट होता। उसे ऐसा लगता जैसे वह पेड़ नहीं, उसके शरीर का अंग काट रहा है।

भाषा की बात.....

1. **क.** बहुत; **ख.** बहुत; **ग.** बहुत; **घ.** बहुत; **ङ.** बहुत

2. **क.** (iv); **ख.** (v); **ग.** (i); **घ.** (ii); **ङ.** (iii)

3. **क.** वक्ता; **ख.** प्रत्यक्ष; **ग.** असंभव; **घ.** वातावरण; **ङ.** अतुलनीय

4. धीरे-धीरे छोटे-छोटे चलते-चलते बहते-बहते

5. **क.** सुंदर; **ख.** शरारती; **ग.** विशाल; **घ.** हरे; **ङ.** मीठा

कर्मवीर

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (ii); **ग.** (i)

2. **क.** कर्मवीर बाधा देखकर नहीं घबराते हैं।
   ख. कर्मवीर सब जगह अपना कर्म करते हुए मिलते हैं।
   ग. 'पर्वतो को काटकर सड़कें बना देने' से कवि का क्या तात्पर्य है कि वह कठिन से कठिन कार्य बड़ी आसानी से कर देते हैं।
   घ. कर्मवीर नया उत्साह जब दिखाते है जब कोई उलझने या बाधा आती है।
   ङ. उन्होंने नभ और तल की खोज करके नये-नये अविष्कार किये है। नये-नये यंत्रों का ज्ञान प्राप्त किया और देश को लाभ प्राप्त करवाये।

3. **क.** अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध''
   ख. कर्मवीर कार्य स्थल को इसलिये नहीं पूछते क्योंकि वह असंभव को भी संभव कर देते हैं।
   ग. उलझने आने पर वे नया उत्साह दिखाते है।
   घ. कर्मवरी अपनी जगह से अपने काम को ठीक करके ही टलते है।

भाषा की बात.....

1. कहाँ – वहाँ जितना – कितना गँवाते – बताते
   मंगल – दंगल उकताते – पछताते बिताते – निभाते

2. बुरे × अच्छे कठिन × सरल संभव × असंभव
   दुख × सुख नभ × धरा आज × कल

3. सड़कें – सड़क अड़चनें – अड़चन उलझनें – उलझन
   नदियाँ – नदी बाधाएँ – बाधा पर्वतों – पर्वत
   जंगलों – जंगल औरों – और नमूने – नमूना

4. दिन – दिवा, वार पर्वत – शैल, नग
   नभ – गगन, अम्बर नदी – तरनी, सरिता

5.

विशेषण	**विशेष्य**
बुरे	अड़चनें
सैकड़ों	काम
सब	दिन
कठिन	उत्साह
नया	काल

6. काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं।

10 प्रेम से परमेश्वर

लिखित कार्य

1. **क.** (iii); **ख.** (i); **ग.** (iii); **घ.** (iii)
2. **क.** मूरत बहुत सदाचारी, सच बोलने वाला, व्यावसायिक और सुशील स्वभाव का व्यक्ति था। वह जो बात कहता, उसे ज़रूर पूरा करता था। न तो वह कभी कम तोलता और न ही घी तेल मिलाकर बेचता था। यदि चीज़ अच्छी न होती, तो वह ग्राहक को साफ़-साफ़ कह देता लेकिन धोखा नहीं देता था।

   ख. बीस वर्ष की अवस्था में मूरत का यह बालक भी स्वर्ग सिधार गया। अब मूरत के शोक की कोई सीमा न थी। उसका विश्वास हिल गया। सदैव परमात्मा की निंदा कर वह कहा करता था कि परमेश्वर बड़ा निर्दयी और अन्यायी है। मारना बूढ़े को चाहिए था, मार डाला युवक को। यहाँ तक कि उसने मंदिर जाना भी छोड़ दिया।

   ग. ''परमात्मा की निष्काम भक्ति करने से अंतःकरण शुद्ध होता है। जब सब काम परमेश्वर को अर्पण करके जीवन व्यतीत करोगे, तो तुम्हे परमानंद प्राप्त होगा।''

   घ. गरीब स्त्री ने अपने जीवन की दुखभरी कथा सुनाते हुए मूरत को कहा कि ''मैं एक सिपाही की स्त्री हूँ। आठ महीने से न जाने कर्मचारियों ने मेरे पति को कहाँ भेज दिया है, कुछ पता नहीं लग रहा। गर्भवती होने पर मैं एक जगह रसोई का काम करती थी। ज्योंही यह बालक उत्पन्न हुआ, तो उन्होंने इस भय से कि दो जीवों को अन्न देना पड़ेगा, मुझे निकाल दिया। मैं तीन महीने से मारीमारी फिर रही हूँ। जो कुछ पास था, सब बेचकर खा गई। इधर साहूकारिन के पास जा रही हूँ। शायद नौकरी पर रख ले।''

   ङ. मूरत ने बालक को क्षमा करने के लिए सेब बेचने वाली स्त्री को समझाया कि– बदला और दंड देना तो मनुष्यों का स्वभाव है, परमात्मा का नहीं। वह तो बहुत दयालु है। यदि इस बालक को एक सेब चुराने का कठिन दंड मिलना उचित है, तो हमें अनंत पापों का क्या दंड मिलना चाहिए?

   च. ईश्वर ने मूरत को लालू, स्त्री, बालक, सेब बेचने वाले के रूप में दर्शन दिए।
3. **क.** परमात्मा की निष्काम भक्ति करने से अंतःकरण शुद्ध होता है।

   ख. जब सब काम परमेश्वर को अर्पण करके जीवन व्यतीत करोगे, तो तुम्हें परमानंद प्राप्त होगा।

   ग. ''गीता, भक्तमालादि ग्रंथों का श्रवण, पठन-मनन किया करो। ये ग्रंथ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों फलों को देने वाले हैं। इनको पढ़ना आरंभ कर दो, चित्त को बड़ी शांति मिलेगी।''

भाषा की बात.....

1. सदाचार – सदा + आचार
   परलोक – पर + लोक
   परमेश्वर – परम + ईश्वर
   निष्काम – निः + काम
   व्यावहारिक – व्यवहार + इक
   परमात्मा – परम + आत्मा
   सदैव – सदा + एव
   परमानंद – परम + आनंद

2. **क.** दर्शन; **ख.** काम धंधे; **ग.** तीर्थयात्रा; **घ.** दर्शन; **ङ.** पकड़

3. **क.** प्रश्नवाचक; **ख.** निषेधवाचक; **ग.** आज्ञावाचक; **घ.** विस्मयादिबोधक; **ङ.** इच्छावाचक; **च.** संदेहवाचक; **छ.** इच्छावाचक; **ज** संकेतवाचक

पैसों का पेड़

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (ii); **ग.** (i); **घ.** (i)

2. **क.** मोहन के अनुसार चंदा देने से बाढ़ पीड़ितों की मदद की जा सकती है।

   ख. जै पैसा महाराज! श्री-श्री पैसा महाराज की जै! अंड-बंड-फंड। छू-मंतर... (हाथ से (फूँक मारकर बताता है।) इस तरह। पेड़ लगे, पैसा उगे—जै पैसा महाराज! छू मंतर! कलकत्तेवाली, हिमालयवाली, मद्रासवाली देवी की जै! इसके बाद तीन-चार पल तक पैसे का ध्यान करना और आगे लिखो—(कुछ सोचकर) अंड-बंड-फंड! छू-मंतर....छू मंतर... छू मंतर.... (एक क्षण रुककर) बस इतना-सा ही मंत्र है।

   ग. मोहन ने गमले में पैसे बोने का लाभ बताया कि इसमें पैसो बोने से दुगने हो जाएगे।

   घ. मोहन ने गमले से निकाले पैसे चंदा जमा करके बाढ़ पीड़ितों की मदद करने के लिए।

3. **क.** सब बच्चे मोहन की ओर से उदासीन होकर अपने खेल में मशगूल हो जाते हैं।

   ख. मोहन के दिमाग में कोई मज़ेदार बात आती है, उसके चेहरे पर खुशी छा जाती है।

   ग. वह संदूकची पटककर खेलने के लिए तैयार हो जाता है।

4. **क.** मितुन; **ख.** वीरु; **ग.** मोहन; **घ.** रीता; **ङ.** मितुन

भाषा की बात.....

1. **क.** नर्तकों ने समा बाँध दिया।

   ख. गाँवों में पानी भर गया।

   ग. इन दिनों हम लिख रहे है।

   घ. सच्चे मित्र मदद करते है।

   ङ. दादी ने कहानियाँ सुनाई।

   च. क्यारियाँ में फूल खिलते है।

2. **क.** तपस्विनी; **ख.** विदुषी; **ग.** शिक्षिका; **घ.** अभिनेत्री; **ङ.** कवयित्री

3. बे — बेबाक, बेसब्र कम — कमअक्ल, कमजोर
   बद — बदकिस्मत, बदबू गैर — गैरकानूनी, गैरमर्द
   हम — हमदर्द, हमसफर दर — दरबार, दअसल

4. भारी × हल्का थोड़ा × ज्यादा खाली × भरा
   गरीब × अमीर फ़ायदा × नुकसान विश्वास × अविश्वास
   दोस्त × दुश्मन शाम × सुबह बड़ा × छोटा

5. अंड-बंड, चंदा-वंदा, बेकार-वेकार, घर-वर, मित्र-वित्र

12 महान् विभूति : राजेंद्र प्रसाद

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (iii); **ग.** (ii); **घ.** (i)

2. **क.** राजेंद्र बाबू की प्रारंभिक शिक्षा छपरा के जिला विद्यालय में हुई। बाद में उन्होंने कलकत्ता के सुप्रसिद्ध प्रेसीडेंसी कॉलेज से उच्च शिक्षा प्राप्त की। वर्ष 1915 में उन्होंने विधि में परास्नातक की परीक्षा स्वर्ण पदक के साथ उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् कानून के क्षेत्र में डॉक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की। वे बहुभाषी विद्वान थे। अंग्रेज़ी, हिंदी, उर्दू, फ़ारसी व बंगाली भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था। वे इन भाषाओं में धाराप्रवाह बोल और लिख सकते थे। उन्हें गुजराती तथा संस्कृत भाषाओं का भी समुचित ज्ञान था।

   ख. राजेंद्र बाबू के पिता श्री महादेव सहाय स्वाध्याय द्वारा आयुर्वेद तथा यूनानी दवाइयों के अच्छे जानकार बन गए थे। वे गरीबों का उचित इलाज करते हुए उन्हें मुफ़्त दवा भी दिया करते थे। वे फ़ारसी भाषा, कसरत तथा घुड़सवारी में भी निपुण थे। ये सारे गुण पुत्र को पिता से अनायास ही प्राप्त हो गए थे। उनकी माता कमलेश्वरी देवी अत्यंत धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। उन्होंने अपने पुत्र को बचपन से ही 'रामायण' और 'महाभारत' की अनेक कहानियाँ सुनाई थीं। इस तरह स्वाभाविक रूप से माता-पिता की परोपकारिता, सेवा-भाव, धार्मिक प्रवृत्ति आदि संबंधी गुण पुत्र में स्वतः चले आए थे।

   ग. स्वतंत्रता आंदोलन के साथ जुड़कर भी वे सामाजिक समस्याओं के प्रति अपने दायित्वों को नहीं भूले। वर्ष 1914 में बंगाल और बिहार के बाढ़ग्रस्त लोगों में वे रात-दिन का अंतर भूलकर भोजन और कपड़ा बाँटते रहे। समाज कल्याण हेतु उनकी निःस्वार्थ और कठिन साधना सचमुच वंदनीय रही है।

   घ. राजवंशी देवी राजेंद्र प्रसाद की पत्नी थी। वे निरंतर परिवार की देख-रेख तथा परिवार में लीन रहती थी और पति की ही भाँति परोपकारिणी, दयाधर्मिणी तथा कर्तव्यनिष्ठ रही।

3. **क.** राजेंद्र बाबू के जीवन पर उनके बड़े भाई महेंद्र प्रसाद का विशेष प्रभाव पड़ा। उन्होंने ही राजेंद्र बाबू के मन में देश-प्रेम की लौ जगाई थी।

   ख. गोपाल कृष्ण गोखले ने उन्हें 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसायटी' नामक संगठन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया,

   ग. राजेंद्र बाबू 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' में पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण शामिल नहीं हो पाए।

   घ. गोपाल कृष्ण गोखले ने उन्हें 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसायटी' नामक संगठन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया,

भाषा की बात.....

1.

	शब्द		**मूलशब्द**	+	**प्रत्यय**
क.	दयालु	—	दया	+	लु
ख.	भोलापन	—	भोला	+	पन

	शब्द		मूलशब्द	+	प्रत्यय
ग.	विशेषता	—	विशेष	+	ता
घ.	अकुलाहट	—	अकुल	+	आहट
ङ.	वंदनीय	—	बंदन	+	ईय
च.	पौराणिक	—	पौराण	+	इक

2	शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
क.	अनुशासन	—	अनु	+	शासन
ख.	अधिकार	—	अधि	+	कार
ग.	अतिरिक्त	—	अति	+	रिक्त
घ.	अपवाद	—	अप	+	वाद
ङ.	परिधान	—	परि	+	धान
च.	प्रदर्शक	—	प्र	+	दर्शक
छ.	आजीवन	—	आ	+	जीवन
ज.	सुभाषिणी	—	सु	+	भाषिणी

3. **क.** परिमाणवाचक विशेषण; **ख.** गुणवाचक विशेषण; **ग.** गुणवाचक विशेषण

4. **क.** मत; **ख.** न; **ग.** नहीं

माँ : जीवन संचालिका

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (iii); **ग.** (ii); **घ.** (ii)

2. **क.** बिस्मिल ने अपनी माँ से कहा कि आप यह आशीर्वाद दो कि अंतिम समय में भी मेरा हृदय विचलित न हो और आप भी उसी प्रकार धैर्य रखना, जैसे गुरु गोविंद सिंह की धर्मपत्नी ने रखा था, जिन्होंने अपने पुत्रों की मृत्यु को हर्षित होते हुए सहन किया था।

   ख. रामप्रसाद बिस्मिल नवीं कक्षा में ही पढ़ते थे, जब उनके हृदय में स्वदेश प्रेम की लौ जगी। उन्हें लगने लगा कि देश के लिए कोई विशेष कार्य किया जाना चाहिए। सन् 1916 तक बिस्मिल की देशभक्ति उनके लिए एक जुनून बन चुकी थी, साथ ही साथ वे साहित्य सृजन भी कर रहे थे। उनके द्वारा रचित 'अमेरिका की स्वतंत्रता का इतिहास' नामक पुस्तक छपते ही जब्त कर ली गई। धीरे-धीरे समय के साथ वे अनेक महानुभावों के संपर्क में आए और कई ऐसी घटनाओं को अंजाम दिया,

   ग. मुझे इस जीवन में आपका ऋण उतारने का अवसर नहीं मिला, यद्यपि इस जन्म में क्या अगले कई जन्मों में भी आपसे उऋण नहीं हो पाऊँगा। जिस प्रेम और दृढ़ता से आपने मेरा यह तुच्छ जीवन सुधारा है, वह अवर्णनीय है।

   घ. अभियोग और मुकदमा चलाने का नाटक खूब चला, जिसमें बिस्मिल ने स्वयं अपने

केस की ऐसी पैरवी की कि जज महाशय भी मुँह देखते रह गए। परंतु हुआ वही, जो पहले से तय हो चुका था। उनको एक खतरनाक अपराधी ठहराया गया और अंततः 19 दिसंबर, 1927 को गोरखपुर जेल में फाँसी देने की सज़ा सुना दी गई।

3. **क.** रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून, 1897 को शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था।

ख. माता-पिता दोनों ही भगवान श्रीराम के परम भक्त थे।

ग. रामप्रसाद को पढ़ाई से अधिक प्रिय खेलना था।

घ. बिस्मिल के पिता कुछ क्रोधी स्वभाव के थे, अतः पढ़ाई में ध्यान न देने पर वे कभी-कभी पुत्र पर हाथ भी उठा देते थे, लेकिन माता सदैव प्रेम से ही समझाती थीं।

भाषा की बात.....

2	**शब्द**		**उपसर्ग**		**मूल शब्द**
	क. समर्पित	—	सम	+	अर्पित
	ख. संपूर्ण	—	सम्	+	पूर्ण
	ग. सानंद	—	स	+	आनंद
	घ. प्रवचन	—	पर्	+	वचन
	ङ. सपूत	—	स	+	पूत
	च. दुर्भाग्य	—	दुर	+	भाग्य
	छ. उऋण	—	उ	+	ऋण
	ज. उपस्थित	—	उप	+	स्थित

3.	**शब्द**		**मूलशब्द**		**प्रत्यय**
	क. जन्मदाता	—	जन्म	+	दाता
	ख. चमकीला	—	चमक	+	ईला
	ग. शिक्षित	—	शिक्षा	+	इत
	घ. प्रसन्नता	—	प्रसन्न	+	ता
	ङ. बुद्धिमान	—	बुद्धि	+	मान
	च. शर्मनाक	—	शर्म	+	नाक
	छ. हृदयस्पर्शी	—	हृदय	+	स्पर्शी
	ज. तत्परता	—	तत्पर	+	ता

4.						
	विद्या + आलय	=	विद्यालय	सुर + ईश	=	सुरेश
	सदा + एव	=	सदैव	राजा + ऋषि	=	राजर्षि
	अति + अधिक	=	अत्यधिक	सु + आगत	=	स्वागत
	कवि + इंद्र	=	कवीन्द्र	पो + अन	=	पवन

5. शास्त्रार्थ — शास्त्र + अर्थ
शुभारंभ — शुभ + आरंभ
स्वर्णाक्षर — स्वर्ण + अक्षर
आत्मार्पण — आत्मा + अर्पण
यथावसर — यथा + अवसर
युगावतार — युग + अवतार
मुनीश्वर — मुनि + ईश्वर
ज्ञानेंद्रिय — ज्ञान + इन्द्रिय

6.

	समस्त पद		समास-विग्रह	समास
क.	भारतमाता	—	भारत की माता	तत्पुरुष
ख.	समयाभाव	—	समय का अभाव	तत्पुरुष
ग.	तिरंगा	—	तीन रगो वाला	द्विगु
घ.	देशरक्षा	—	देश की रक्षा	सम्बन्ध तत्पुरुष

कश्मीरी सेब

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (ii); **ग.** (i)
2. **क.** लेखक ने खाने के लिए जब सेब निकाले, तो उसने देखा कि सारे सेब सड़े हुए थे।
   ख. समाज का चारित्रिक पतन के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि जब हम व्यापारी पर विश्वास कर लेते हैं या आँखे बंद करके खरीदारी करते है, तब व्यापारी बेईमानी करता है उसे अवसर मिल जाता है। क्योंकि आदमी अवसर मिलने पर ही बेईमानी करता है।
   ग. दुकानदार ने लेखक के बारे में भाँप लिया था कि यह सीधा व्यक्ति है। उसने सहज ही दुकानदार पर विश्वास कर लिया।
   घ. मैंने मुहर्रम के मेले में एक खोमचे वाले से एक पैसे की रेवड़ियाँ ली थीं और पैसे की जगह अठन्नी दे आया था। घर आकर जब अपनी भूल मालूम हुई, तो खोमचे वाले के पास दौड़ा गया। आशा नहीं थी कि वह अठन्नी लौटाएगा, लेकिन उसने प्रसन्नचित्त भाव से अठन्नी लौटा दी और उलटे मुझसे क्षमा माँगी।
3. **क.** आदमी बेईमानी तभी करता है, जब उसे अवसर मिलता है।
   ख. किसी थाने, कचहरी या म्यूनिसपीलिटी में चले जाइए, आपकी ऐसी दुर्गति होगी कि आप बड़ी-से-बड़ी हानि उठाकर भी उधर न जाएँगे।
   ग. व्यापारियों की साख अभी तक बनी हुई थी। यों तौल में चाहे छटाँक-आध-छटाँक कम कर लें, लेकिन आप उन्हें पाँच की जगह दस का नोट दे आते थे, तो आपको घबराने की कोई ज़रूरत न थी।

भाषा की बात.....

1. आदमी — मनुष्य, मनुज, नर
   संसार — विश्व, लोक, जगत
   प्रातःकाल — सुबह, प्रभात, सवेरा

2. शिक्षित × अशिक्षित सुरक्षित × असुरक्षित प्रातः × सायं
दुर्गति × सद्गति बेईमानी × ईमानदारी आवश्यक × अनावश्यक

3. शिक्षित — इ + श + इ + क्ष + त
चौक — च् + औ + क् + अ
श्रमिक — श् + र् + अ + म् + इ + क् + अ
गाजर — ग् + आ + ज् + अ + र् + अ
कश्मीरी — क् + अ + श् + म + ई + र् + ई

अनूठा गुजरात

लिखित कार्य

1. **क.** (iii); **ख.** (iii); **ग.** (ii); **घ.** (i)

2. **क.** पश्चिमी भारत में स्थित गुजरात एक अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य है। प्राचीन काल में यहाँ गुर्जरों का साम्राज्य होने के कारण इसे 'गुर्जरभूमि' कहा जाता था।

   ख. नरसी मेहता, प्रेमानंद, दयाराम, दयानंद सरस्वती, महात्मा गाँधी, सरदार वल्लभभाई पटेल तथा सुप्रसिद्ध क्रिकेट-खिलाड़ी रण जी जैसे व्यक्तित्वों ने गुजरात को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है।

   ग. गुजरात अपनी कला व शिल्प की वस्तुओं के लिए भी प्रसिद्ध है। गुजरात आने वाले पर्यटक जामनगर की बाँधनी साड़ियाँ, पाटन का उत्कृष्ट रेशमी वस्त्र, पटोला, खिलौने तथा पालनपुर का इत्र खरीदना नहीं भूलते।

   घ. गुजरात की वास्तुकला-शैली अपनी भव्यता व अलंकारिता के लिए विख्यात है, जो सोमनाथ, द्वारिका, मोधेरा, थान, गिरनार जैसे मंदिरों और स्मारकों में संरक्षित है।

   ङ. गुजरात में सूती वस्त्र उद्योग की वजह से इसे 'भारत का मैनचेस्टर' भी कहा जाता है।

   च. पर्यटन की दृष्टि से गुजरात काफ़ी समृद्ध राज्य है। रॉयल पैलेस, सरदार सरोवर बाँध, सोमनाथ मंदिर, द्वारिकाधीश मंदिर, हाजीपुर दरगाह, गिर वन राष्ट्रीय पार्क, लोथल व ढोलाविरा (सिंधु घाटी सभ्यता की खुदाई से चर्चित आधुनिक शहर), कच्छ का रेगिस्तान, कीर्ति मंदिर, साबरमती आश्रम, लक्ष्मी विलास पैलेस, वॉटसन म्यूज़ियम, स्टेच्यू ऑफ यूनिटी (सरदार वल्लभभाई पटेल स्मारक) आदि गुजरात में प्रमुख रूप से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

3. **क.** प्रतिवर्ष 14 जनवरी को अहमदाबाद में मकर संक्रांति पर अंतरराष्ट्रीय पतंग उत्सव मनाया जाता है।

   ख. नवरात्रि, डांगी दरबार आदि भी यहाँ के प्रमुख पर्व हैं।

   ग. गुजरात कपास, मूँगफली, नमक व दूध के उत्पादन में अग्रणी है।

   घ. यहाँ विभिन्न उत्सवों पर विभिन्न मेले भी लगते हैं, जिनमें तरणेतर मेला, शामलाजी मेला, भावनाथ मेला, माधवराय मेला, अंबाजी मेला आदि प्रसिद्ध हैं। राज्य का सबसे बड़ा वार्षिक मेला द्वारिका और डाकोर में जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित होता है।

4. **क.** गुर्जरों का; **ख.** गाँधीनगर; **ग.** अहमदाबार; **घ.** गरबा, लोकनृत्य; **ङ.** पालनपुर

भाषा की बात.....

1. महोत्सव — महा + उत्सव
जन्माष्टमी — जन्म + आष्टमी
स्वागत — स्व + आगत
अंतरराष्ट्रीय — अंतर + राष्ट्रीय
प्रेमानंद — प्रेम + आनंद
देवर्षि — देव + ऋषि

2.

शहर	शहरी	स्वदेश	स्वदेशी	प्यास	प्यासा
पक्ष	पाक्षिक	मास	मासिक	नीति	नैतिक
निश्चय	निश्चत	आश्रय	आश्रित	उत्साह	उत्साही
संस्कृति	सांस्कृतिक	समाज	सामाजिक	भूगोल	भौगोलिक

3.

प्रतिहार	हार	प्रगति	गति	विभिन्न	भिन्न
आयोजित	योजित	प्रयोग	योग	पौराणिक	पौराण
भव्यता	भव्य	सभ्यता	सभ्य	व्यक्तित्व	व्यक्ति

4.

गरीब	गरीबी	अमीर	अमीरी	योग्य	योग्यता
बुरा	बुराई	सरल	सरलता	मीठा	मीठापन
श्रेष्ठ	श्रेष्ठता	चतुर	चतुरता	मोटा	मोटापा

5.

	समस्त पद	विग्रह	समास
क.	गंगाजल	गंगा का जल	सम्बन्ध तत्पुरुष
ख.	यथोचित	जितना उचित हो	अव्ययीभाव
ग.	राजपुत्र	राजा का पुत्र	तत्पुरुष
घ.	दानवीर	दान देने में वीर	तत्पुरुष
ङ.	आजीवन	जीवन भर	अव्ययीभाव
च.	बेअसर	बिना असर के	अव्ययीभाव

मनभावन सावन

लिखित कार्य

1. **क.** कवि का मन जल की धार की तरह झूलता है।
   ख. कवि सबके साथ मिलकर इंद्रधनुष के झूले में झूलना चाहते है।
   ग. कवि ने इच्छा व्यक्त की है कि मनभावन सावन जीवन में बार-बार आये।
2. **क.** सावन के मौसम में झम-झम कर बादल बरसते हैं वर्षा के पानी की बूंदे पेड़ों से छन के जमीन पर गिरती है, आसमान में बादलों के बीच बिजली चमकती है, दिन में सूर्य के बादलों के बीच छुपने से कभी अंधेरा छा जाता है तो कभी सूर्य के बादलों से बाहर निकलते ही उजाला हो जाता है, इस प्रकार सावन के महीने की वर्षा मन को लुभानेवाली होती है, और वातावरण में चारों ओर हरियाली छा जाती है। पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ सभी हरे-भरे हो जाते हैं, चारो ओर हँसी-खुशी का वातावरण होता है।
   ख. जिस प्रकार रिमझिम करके बूंदे आवाज कर रही है, मानो कुछ कह रही है, उसमें रोमांच होता है और हृदय पर प्रभाव पड़ता है, पानी की गिरती धाराओं से धरती के कण-कण में हरे-भरे अंकुर फूट रहे है, जब वर्षा का पानी रिस-रिसकर धरती के अंदर जाता है। तो धरती का रोम-रोम सिहर उठता है।
   ग. सावन ऋतु में काले-काले बादल चारों ओर छा जाते हैं, उन बादलों के आपस में टकराने से जोरो की गड़गड़ाहट होती है, बिजली चमकती है, पानी की तेज बौछारें धरती पर गिरने लगती है, जिससे कभी ये बादल सूर्य को ढक के चारों तरफ अँधेरा कर देते हैं।
   घ. सावन में हरियाली को देखते हुए सबके चेहरों पर हँसी सी आ जाती है, नीम के पेड़ भी खुशी से झूमते है, बेल और कलियाँ भी पल-पल बढ़ती जाती है, और उस हरियाली को देखकर सभी हँसी-खुशी आनंद लेते हैं, इसलिए कवि ने हरियाली को हँसमुख कहा है।
   ङ. वर्षा की बूँदे जब रिमझिम कर धरती पर गिरती है तो ऐसा लगता है जैसे धरती से कुछ बोली रही हो, धाराओं पर धाराएँ धरती पर गिरती जाती है, जब वर्षा को पानी रिसकर धरती के अंदर जाता है तो धरती को रोम-रोम सिहर उठता है, मिट्टी के कण-कण में घास के प्रत्येक तिनके में भीगने के कारण तृण में पुलकावलि भर उठती है, एक नई आनंद की लहर दौड़ जाती है।
3. **प्रसंग :** प्रस्तुत कविता में कवि ने सावन के बरसते बादल का मनोरम चित्र खींचा है। कविता के अन्त में कवि ने जन-जन के जीवन में सावन का उल्लास भरने की कामना की है।
   भावार्थ : कवि कहते हैं कि ताड़ के पत्ते पंखों से नजर आते हैं, लम्बी-लम्बी अंगुलियाँ और हथेली के साथ उन पर पानी की धार तड़-तड़ करके पड़ती है, हाथ और मुँह से बूंदे झिल-मिल करती हुई टप-टप गिरती है।

भाषा की बात.....

1. **क.** नाप-तौल — मैंने गिनती और नाप-तौल अपने पिताजी से सीखा है
   कुल-जोड़ — तीसरे नंबर पर आने के कारण उन्हें बस 1 अंक ही मिले और उनका कुल जोड़ हुआ 19।
   ख. वंश — नेहरू कश्मीरी वंश के सारस्वत ब्राह्मण थे।
   जाति — इस जाति के पक्षी भोजन की खोज में दूर-दूर तक घूमते है।
   ग. सूँड — हाथी ने अपनी सूँड से पेड़ की टहनी तोड़ दी।
   किरण — सूर्य की किरण पानी पर पड़ते ही चमक उठी।
   घ. किन्तु — तुम पढ़ने में तो अच्छे हो किन्तु अपनी लिखाई पर भी ध्यान दो।
   पंख — रोहन को चिड़ियों के पंख इकट्ठे करने का शौक है।

2. तरु — वृक्ष, पेड़ | खग — चिड़िया, गगनचर
   बिजली — विद्युत, दामिनी | शशि — चंद्रमा, चाँद
   दिनकर — रवि, सूर्य | वारि — जल, नीर
   मेघ — बादल, घन | हृदय — छाती, वक्ष

3. झम-झम-झम, छम-छम-छम, चम-चम
   थम-थम, तड़-तड़, टप-टप

4. घन — मन, पर — कर, दल — चल
   चंचल — मचल, दल — जल, पल — नल
   क्रंदन — वंदन, भर — सर, छन — तन

बूढ़ी काकी

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (ii); **ग.** (iii)

2. **क.** बूढ़ी काकी के पति को स्वर्ग सिधारे बहुत समय बीत चुका था। बेटे तरुण हो-होकर चल बसे थे। अब एक भतीजे के सिवाय और कोई नहीं था। उसी भतीजे के नाम उन्होंने अपनी सारी संपत्ति लिख दी। भतीजे ने सारी संपत्ति लिखवाते समय खूब लंबे-चौड़े वादे किए, किंतु वे सब वादे केवल कुली डिपो के दलालों के दिखाए हुए सब्ज़बाग थे। यद्यपि उस संपत्ति की वार्षिक आय डेढ़-दो सौ रुपए से कम न थी, तथापि बूढ़ी काकी को पेटभर भोजन भी कठिनाई से मिलता था। इसमें उनके भतीजे पंडित बुद्धिराम का अपराध था अथवा उनकी अर्द्धांगिनी श्रीमती रूपा का—इसका निर्णय करना सहज नहीं।

   ख. जब द्वार पर कोई भला आदमी बैठा होता और बूढ़ी काकी उस समय अपना राग अलापने लगतीं, तो वे आग बबूला हो जाते और घर में आकर उन्हें ज़ोर से डाँटते। लड़कों को बूढ़ों से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है और फिर जब माता-पिता का यह रंग देखते, तो वे बूढ़ी काकी को और सताया करते। कोई चुटकी काटकर भागता, कोई उन पर पानी की कुल्ली कर देता। काकी चीख मारकर रोती, परंतु यह बात प्रसिद्ध थी कि वे केवल खाने के लिए रोती हैं।

ग. बूढ़ी काकी की कल्पना में पूड़ियों की तस्वीर नाचने लगी। खूब लाल-लाल, फूली-फूली, नरम-नरम होंगी। रूपा ने भली-भाँति भोजन किया होगा। कचौड़ियों में अजवाइन और इलायची की महक आ रही होगी। एक पूड़ी मिलती तो ज़रा हाथ में लेकर देखती। क्यों न चलकर कड़ाह के सामने ही बैठूँ। पूड़ियाँ छन-छनकर तैयार होंगी। इस प्रकार निर्णय करके बूढ़ी काकी उकड़ूँ बैठकर हाथों के बल सरकती हुई बड़ी कठिनाई में चौखट से उतरीं और धीरे-धीरे रेंगती हुई कड़ाह के पास आ बैठीं।

घ. रूपा ने देखा बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठाकर खा रही हैं। रूपा का हृदय सन्न हो गया। एक ब्राह्मणी दूसरों की जूठी पत्तल टटोले, इससे अधिक शोकमय दृश्य असंभव था। पूड़ियों के कुछ ग्रासों के लिए उसकी चचेरी सास ऐसा पतित और निकृष्ट कर्म कर रही है। यह वह दृश्य था, जिसे देखकर देखने वालों के हृदय काँप उठते हैं। करुणा और भय से उसकी आँखें भर आईं। उसने सच्चे हृदय से गगन मंडल की ओर हाथ उठाकर कहा—"परमात्मा! मेरे बच्चों पर दया करो। इस अधर्म का दंड मुझे मत दो, नहीं तो मेरा सत्यानाश हो जाएगा।"

वह सोचने लगी—"हाय! मैं कितनी निर्दयी हूँ। जिसकी संपत्ति से मुझे दो सौ रुपया वार्षिक आय हो रही है, उसकी यह दुर्गति! और मेरे कारण? हे दयामय भगवान! मुझसे बड़ी भारी चूक हुई है।

रूपा ने दीया जलाया, अपने भंडार का द्वार खोला और एक थाली में संपूर्ण सामग्रियाँ सजाकर हाथ में लिए हुए बूढ़ी काकी की ओर चली।

बूढ़ी काकी को अपने सम्मुख थाल देखकर बहुत सुख प्राप्त हुआ। रूपा ने कंठावरुद्ध स्वर में कहा—"काकी उठो, भोजन कर लो। मुझसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा न मानना। परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दे।"

ङ. कानों में आवाज़ आई—"काकी उठो, मैं पूड़ियाँ लाई हूँ।" काकी ने लाडली की बोली पहचानी। झटपट उठ बैठीं। दोनों हाथों से लाडली को टटोला और उसे गोद में बैठा लिया। लाडली ने पूड़ियाँ निकाल कर दीं।

काकी पूड़ियों पर टूट पड़ीं। पाँच मिनट में पिटारी खाली हो गई। लाडली ने पूछा—"काकी पेट भर गया।" जैसे थोड़ी-सी वर्षा ठंडक के स्थान पर और भी गरमी पैदा कर देती है, उसी भाँति इन थोड़ी पूड़ियों ने काकी की क्षुधा और इच्छा को और उत्तेजित कर दिया था।

3. **क.** किसी ने बाहर से कहा; **ख.** रूपा ने; **ग.** लाडली ने; **घ.** काकी ने

4. **क.** ✓; **ख.** ✗; **ग.** ✓; **घ.** ✗; **ङ.** ✗; **च.** ✓

भाषा की बात.....

1.

स्वर्ग	×	नरक	भलाई	×	बुराई	मौखिक	×	लिखित
सुचेष्टा	×	कुचेष्टा	अनुराग	×	विराग	न्याय	×	अन्याय
प्रतिकूल	×	अनुकूल	कठोर	×	कोमल	निर्दयी	×	दयालु

2. **क.** विकारी; **ख.** अविकारी; **ग.** विकारी; **घ.** अविकारी

3. **क.** <u>शाबाश</u>! तुमने बहुत अच्छा काम किया। — विस्मयादिबोधक
   ख. मुझे भूख लगी थी <u>इसलिए</u> खाना खा लिया। — समुच्चयबोधक
   ग. बच्चे घर के <u>बाहर</u> दौड़ रहे थे। — संबंधबोधक

घ. काकी कोठरी के भीतर बैठी थीं। संबंधबोधक

ङ. धन के बिना जीवन में सुख नहीं मिलता। संबंधबोधक

4. **क.** बूढ़ी काकी दीवार के सहारे बैठी थी। संबंधबोधक

ख. घर के सभी लोग खा-पीकर सो गए। क्रियाविशेषण

ग. लाडली काकी के पास जाना चाहती थी। संबंधबोधक

घ. काकी चीख मारकर रोती थी। क्रियाविशेषण

ङ. परिवार के किसी व्यक्ति ने काकी के विषय में नहीं सोचा। संबंधबोधक

5. **क.** अच्छी बातें कहकर बहकाना
लड़के ने शादी का सब्ज़बाग दिखाकर लड़की को धोखा दे दिया।

ख. क्रोध से उन्मत्त हो जाना
राधिका जरा-सी बात पर आग बबूला हो गई।

ग. मन में वेदना उत्पन्न होना
फुटपाथ पर बेसहारा लोगों की हालत देखकर मेरे कलेजे में हूक उठने लगी।

घ. लालच होना
गरमा-गरम समोसे और इमली की चटनी देखकर ही मुँह में पानी भर आया।

अगर नाक न होती

लिखित कार्य

1. **क.** (ii); **ख.** (ii); **ग.** (iii); **घ.** (i); **ङ.** (iii)
2. **क.** नाक नीची होने के डर से लोग उचित-अनुचित कार्य में भेद नहीं करते और अपनी नाक ऊँची रखने के लिए कोई अनुचित कार्य या सामर्थ्य से बाहर का कार्य करने को भी तैयार हो जाते हैं।

ख. नाक का रहना बहुत जरूरी है क्योंकि नाक होती है जो हमारी इज्जत रखती है, और नाक ही तो है जो सुंदरता बढ़ाती है, नाक चाहे सारस जैसी लंबी हो या चिलगोजे जैसी छोटी, चोथ जैसी चपटी हो अथवा पकोड़े जैसी मोटी, लेकिन होनी जरूर चाहिए।

ग. नाक शरीर में प्रवेश करने वाली ऑक्सीजन को फिलटर करके हमारे शरीर में आने देती है जिससे हम बीमारियों से बचे रहते हैं।

घ. मध्यकालीन काव्य में नायिकाओं की नाक के लिए बहुत-सी उपमाएँ दी गई है जिसमें नाक को चंपे की कली, तिल के सुगंधित फूल से निर्मित और तलवार की धार से बढ़कर बताया गया है।

ङ. 'रामायण' और 'महाभारत' में नाक का महत्व यह बताया गया है कि नाक के कारण ही सीता का हरण और रावण का मरण हुआ, अगर सूर्पनखा की नाक न कटती तो 'रामायण' की रचना नहीं होती, 'महाभारत' का आधार भी द्रौपदी की नाक ही थी, जो अत्यनत खतरनाक सिद्ध हुई।

3. **क.** लेखक ने नाक का रहना जरूरी इसलिए बतया है क्योंकि नाक ही तो है जो हमारी इज्जत रखती है और हमारी सुंदरता को भी बढ़ाती है।

ख. लेखक ने पाठांश में नाक की तुलना सारस जैसे लंबी हो या चिलगोजे जैसी छोटी, चोटी जैसी चपटी हो या अथवा पकोड़े जैसी मोटी से की है।

ग. लेखक ने बिना नाक वाले चेहरे को बिना छज्जे के मकान के फ्रंट के समतुल्य बताया है।

घ. कवियों ने नाक को सोने की हरे-मोती से जड़ी नथ, नथुनी, लोंग, बुलाक आदि से सजाया है।

4. **क.** करुण रस में बरबस बीभत्स रस आ टपकता है से आशय यह है कि करूण रस, इसका स्थायी भाव शोक होता है, इस रस में किसी अपने का विनाश या अपने का वियोग, द्रव्यनाश एवं प्रेमी से सदैव बिछुड़ जाने या दूर चले जाने से जो दुःख या वेदना उत्पन्न होती है, उसे करुण रस कहते हैं, यद्यपि वियोग श्रृंगार रस में भी दुःख का अनुभव होता है लेकिन वहाँ पर दूर जाने वाले से पुनः मिलन की आशा बंधी रहती है।

ख. 'नाक के कारण ही सीता का हरण और रावण का मरण हुआ' से यह आशय है कि अगर नाक न होती तो सीता का हरण और रावण का मरण न होता, हर किसी व्यक्ति को अपनी नाक प्यारी होती है, अपनी नाक को बचाने अर्थात् नाक न कटे और रावण की नाक बची रहे, इसलिए ही सीता का हरण हुआ और राम की नाक न कटे इसलिए रावण का मरण हुआ इसलिए अपनी नाक को बचाने के लिए हर व्यक्ति कुछ भी कर सकता है।

भाषा की बात.....

1. के सामने — मेरे घर के सामने एक दुकान है
   के बिना — इंसान अन्न के बिना नहीं रह सकता।
   के नीचे — तुम्हारे पेन टेबल के नीचे है।
   की ओर — सीता राम की ओर देखती है।
   के बदले — यह संदेश चिट्ठी के बदले फोन से भेजा जा सकता है।
   की अपेक्षा — नीलू गीता की अपेक्षा ज्यादा समझदार है।
2. **क.** माँ अपने बच्चे को दूध पिलाती है।
   ख. यह कोशिश रहती है कि उसकी नाक कटवा दी जाए।
   ग. सेठ जी बच्चे के जन्मदिन पर सभी को दावत खिलवाते है।
3. अनुकूल × प्रतिकूल असली × नकली सुगंध × दुर्गंध
   दुर्भाग्य × सौभाग्य आंतरिक × बाहरी दूर × पास
4. घमंड — अहंकार, अभिमान आँख — नेत्र, नयन
   हाथ — हस्त, भुजा घर — ग्रह, भवन
   पुष्प — फूल, सुमन आदमी — मानव, नर
5. **क.** हार — पराजय, आभूषण
   ख. कर — टैक्स, हाथ
   ग. अंग — शरीर, अंश
   घ. वर — दूल्हा, वरदान
6. **क.** नौ दो ग्यारह; **ख.** दिया तले; **ग.** मुँह में पानी; **घ.** लोहे के चने

बालसखी बिंदा

लिखित कार्य

1. **क.** बिंदा का कद देखकर लेखिका को लगता था, मानों किसी ने ऊपर से दबाकर उसे कुछ छोटा कर दिया हो।

   ख. पंडिताइन चाची का स्वर सुनते ही बिंदा का सारा शरीर थरथरा उठता था, प्रत्युत् उस भय में बदल देता था और बिंदा की आँखे तो पिंजरे की बंद चिड़िया जैसी हो जाती थी।

2. **क.** बिंदा की नई अम्मा अपनी विशेष कारीगरी से सँवारी पाटियों के बीच लाल स्याही की मोटी लकीर-सा सिंदूर, आँखों में काले डोरे के समान लगने वाला काजल, चमकीले कर्णफूल, गले की माला, नगदार रंग-बिरंगी चूड़ियाँ और घूँघरुदार बिछुए ये सब अलंकार गुड़िया जैसी प्रतीत होती थी।

   ख. लेखिका को बिंदा की नई अम्मा का व्यवहार अपनी माँ से अलग इसलिए जान पड़ता था क्योंकि वह बिंदा को कभी प्यार नहीं करती थी, जबकि लेखिका की अम्मा सर्दी के दिनों में जब धूप निकलने के बाद जगाती थी गरम पानी से हाथ-मुँह धुलाकर मोजे, जूते और ऊनी कपड़ों से लेखिका को सजाती थी, जबकि बिंदा को सर्दी के दिनों में भी घर का सारा काम करना पड़ता था और बिंदा की नई अम्मा बिंदा को बात-बात पर प्रताडित करती थी, बिंदा के मन में नई अम्मा का डर बैठ गया था।

   ग. बिंदा घर के सारे काम करती थी, जैसे झाड़ू लगाना, कभी आग जलाना, कभी आँगन के नल से कलसी में पानी लाना, कीाी नई अम्मा को दूध का कटोरा देने जाना, ये सभी घर के काम बिंदा करती थी।

   घ. बिंदा को कोठरी की घास का चुभता हुआ ढेर रेशमी बिछौने जैसा इसलिए लगा क्योंकि जब बिंदा ने नन्हें-नन्हें हाथों से दूध की पतीली उतारी तो वह पतीली बहुत गर्म थी तो बिंदा ने दूध की गर्म पतीली उतारी तो अवश्य, पर वह उसकी उँगलियों से छूटकर गिर पड़ी, खौलते दूध से जले पैरों के साथ दरवाजे पर बिंदा रोती रही, फिर बिंदा कोठरी में जा घुसी, जिसमें गाय के लिए घास भरी जाती थी, बिंदा अपने जले पैरों को घास में छिपाए और दोनों ठण्डे हाथों को दबाये बैठी थी, मानो घास का चुभता हुआ ढेर रेशमी बिछौना बन गया हो।

   ङ. बिंदा की नई अम्मा उसके साथ बुरा बर्ताव करती थी, वह उससे घर का सारा काम करवाती थी, उसे बात-बात पर प्रताड़ित करती थी, बिंदा के मन में नई अम्मा का डर बैठ गया थ, इसलिए वह उसकी आवाज सुनकर सहम जाती थी।

3. **क.** अध्यापिका; **ख.** बिंदा के पिता; **ग.** पंडिताइन चाची; **घ.** लेखिका; **ङ.** लेखिका

भाषा की बात.....

1. स्वागत — स्व + आगत
   जलाशय — जल + आशय
   अधिकांश — अधिक + अंश
   विद्यार्थी — विद्या + अर्थी
   सप्तर्षि — सप्त + ऋषि
   मात्राज्ञा — मात्र + आज्ञा
   अन्वेषण — अनु + एषण
   अज्ञानावस्था — अज्ञान + अवस्थृ

2. सज्जन × दुर्जन सलज्ज × निर्लज्ज स्वर्ग × नरक

विरोध × स्वीकार	समर्थ × असमर्थ	सावधानी × लापरवाह
दुखद × सुखद	उच्च × निम्न	उपेक्षा × अपेक्षा

3. **क.** मैं बिंदा की नई अम्मा को पंडिताइन चाची कहती थी।
   ख. मेरे लिए घर के सब काम करना असंभव है।
   ग. मैं उसे न बुलाने का संकल्प करूँगी।
4. **क.** कर्तृवाच्य; **ख.** कर्मवाच्य; **ग.** भाववाच्य; **घ.** कर्तृवाच्य
5.

पंडिताइन — पंडित	भिखारिन — भिखारी	सिंहनी — सिंह
कुतिया — कुत्ता	बैल — गाय	अभागा — अभागिन
चाचा — चाची	माता — पिता	सखी — सखा

सत्कर्तव्य

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (i); **ग.** (i); **घ.** (iii)
2. **क.** कवि ने मनुष्य का कर्तव्य सत्कर्तव्य बताया है कि प्रकृति में प्रत्येक प्राणी चाहे वह जड़ हो या चेतन अपने-अपने कर्म में रत (लगा हुआ) है। मनुष्य जो इस प्रकृति की सत्रश्रेष्ठ रचना है।
   ख. कवि ने स्वार्थी मनुष्य को पशु प्रकृति से प्रेरित बताया है। जिस प्रकार पशु स्वयं भोजन ग्रहण कर केवल अपना पेट भरता है, वैसा जीवनयापन वो किसी आत्मकेंद्रित व्यक्ति की निशानी है। परमात्मा के अंश के रूप में हम सब इस पृथ्वी पर वास करते हैं। अतः हममें से प्रत्येक में विश्वबंधुत्व भी भावना होनी चाहिए।
   ग. कवि ने मेघाबल की विशेषताएँ बताई है कि मनुष्य अपने बुद्धि के बल पर ही सही गलत का निर्णय ले सकता है। अर्थात् मनुष्य को अपने विवेक से ही काम करना चाहिए।
   घ. संसार एक परीक्षा-स्थल है। क्योंकि मनुष्य को बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
   ङ. सत्कर्तव्य में कवि रामनरेश त्रिपाठी ने बताया है कि पूरी प्रकृति धरती, सूर्य, नदियाँ, पेड़-पौधे, बादल, आकाश, हवा आदि अपना कार्य करते हुए परोपकार करके मानव का कल्याण कर रहे हैं। इसी प्रकार मनुष्य को भी अपना सत्कर्तव्य पहचानना चाहिए और उसी के अनुरूप आचरण करना चाहिए।
3. **क.** कवि राम नरेश त्रिपाठी कहते हैं कि संसार में सभी प्राणी अपने-अपने कार्य करने में लगे हुए हैं। सभी को अपना कार्य करने की लगन व निश्चित प्रतिज्ञा है।
   ख. कवि कहते हैं कि पेड़ का छोटा सा पत्ता भी अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए अपने छोटे-से जीवन को अंतिम समय तक कार्य करने में लगा देता है।
   ग. कवि कहते हैं कि जिस धरती पर हमने जन्म लिया है। खा-पीकर बड़े हुए हैं। वह धरती माँ हमारी माता के समान है।
4. **प्रसंग :** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने 'सतकर्तव्य' के बारे में बताया है।
   भावार्थ : कवि मनुष्य को संबंधित करते हुए कहते हैं कि तुम मनुष्य हो, तुम अत्यधिक

बुद्धि बल से तुम्हारा जीवन शोभायमान है। तुम्हारे इस संसार में जन्म लेने का क्या उद्देश्य है, यह तुमने कभी विचार किया है? आगे कवि मनुष्य से कहते हैं कि हे मनुष्य! तुम बुरा मत मानना। लेकिन एक बार अपने मन में यह विचार करो कि क्या तुमने अपने जीवन में सारे कर्तव्य समाप्त कर लिए है?

भाषा की बात.....

1. **क.** संख्या, चिन्ह; **ख.** चिट्ठी, पत्ता; **ग.** समाधान, सरलता; **घ.** स्वभाव, वातावरण
2. जग — लोक, दुनिया, संसार वसुधा — पृथ्वी, धरा, धरती
   पत्ता — पत्र, दल, पल्लव रवि — सूर्य, सूरज, दिनकर
   तन — शरीर, देह, अंग नीर — जल, वारि, पानी
   समीर — वायु, हवा, पवन माता — जननी, माँ, मैया
3. निश्चित × अनिश्चित छाया × धूप लघु × दीर्घ
   जन्म × मृत्यु चर × अचर निष्क्रिय × सक्रिय
   प्रश्न × उत्तर हित × अहित स्नेह × घृणा
4. अति — अतिमान, अत्यधिक उप — उपस्थिति, उपकार
   स्व — स्वराज्य, स्वाभिमान स — सचेतन, सजीव
5. **क.** अकर्मण्य; **ख.** उऋण; **ग.** कृतज्ञ; **घ.** अद्वितीय

बूढ़ा कुत्ता

लिखित कार्य

1. **क.** (iv); **ख.** (iii); **ग.** (iv)
2. **क.** जब बूढ़ा कुत्ता लेखक के घर आता है तो बार-बार दुत्कारे जाने के बाद भी बरामदे के बाहर, अगले पैर खड़े कर और अपने पिछले भाग को जमीन से सटाकर धीरे-धीरे पूँछ हिलाता हुआ, करूण-कुत्ते की करुण-सजल नेत्रों से लेखक की ओर देखना, लेखक के मन में कुत्ते के प्रति लगाव होने लगा था।

   ख. पाठ में 'जहाँगीर' के शासन का उल्लेख हुआ है, जहाँगीर मुगल शासक अकबर के बड़े बेटे थे, जिनको रंगीन मिजाज का बेहद शौक था, जिसके शान-ओ-शौकत के चर्चे काफी मशहूर थे। वह अपनी 'न्याया की स्वर्ण श्रृंखला' के लिए प्रसिद्ध है। 'नूरजहाँ' मुगल काल की एक महारानी थी, जिन्हें भारत के इतिहास में मुगल शासक जहाँगीर की सबसे पसंदीदा पतनी के तौर पर याद किया जाता है, नूरजहाँ एक आकर्षक महिला थी जिन्होंने तमाम अड़चनों का सामना करते हुए मुगल शासन की कमान संभाली, अभिमन्यु महाभारत के नायक तथा वीर और साहसी थे, अभिमन्यु ने महाभारत में कौरव पक्ष की व्यूह रचना, जिसे चक्रव्यूह कहा जाता था, के सात में से छह द्वार भेद दिए थे। वे चक्रव्यूह भेदन में माहिर थे।

   ग. 'बूढ़ा कुत्ता' पाठ में यह बाते ज्ञात होती हैं कि कुत्ता बहुत वफादार होता है, कुत्ता अपने मालिक को नहीं छोड़ता है, उसे इंसान कितना भी मारे-पीटे कुत्ता कभी भी वफादारी करना नहीं छोड़ता और अपने मालिक के घर को अपना ही घर समझता है।

3. **क.** कुत्ते की हालत बहुत खराब थी, उसका शरीर धूलि-धूसरित था, इसके बदन पर दाँत के गई दाग थे, जिनसे ताजा खून टपक रहा था।

ख. कुत्ते को लेखक ने 'अतू-अतू' कहकर पुकारा।

ग. लेखक ने कुत्ते को दही-भात खाने को दिया और खाट के नीचे रख दिया, उसे खाकर फिर वह लेट गया।

4. **क.** यह कंबख्त बुढ़ापा क्या चीज है? यह क्यों शरीर से शक्ति छीन लेता है, जर्जर-क्षीण बना डालता है? जीवों का अंत इतना बुरा क्यों होता है? बचपन का दुलार, जवानी का प्यार और उसके बाद बुढ़ापे की यह दुत्कारफटकार! सारी शक्ति खोकर, सारा सम्मान खोकर, तिल-तिल, गल-गल कर मरना।

ख. चोरों ने कई बार कुत्ते पर आक्रमण किया था। एक बरछा तो ऐसा लगा था कि उस दिन तो इसका अर्थात् खत्म हो गया होता वारा-न्यारा ही हो गया होता। अर्थात् खत्म हो गया होता।

ग. 'विधाता यह तुम्हारा कैसा विधान है' से यह आश है कि जब बुढ़ापा आता है तो शरीर की शक्ति कम हो जाती है, बचपन का दुलार, जवानी का प्यार और उसके बाद बुढ़ापे की दुत्कार जिसमें मनुष्य की सारी शक्ति कम और सारा सम्मान खोकर, तिल-तिल कर मरने लगता है।

भाषा की बात.....

1.

वाक्यांश		**विशेषण**	**विशेष्य**	**वाक्यांश**		**विशेषण**	**विशेष्य**
सजल नेत्र	—	सजल	नेत्र	कर्तव्यपरायण जीव	—	कर्तव्यपरायण	जीव
बंदूकधारी मित्र	—	बंदूकधारी	मित्र	मोटा-ताजा पिल्ला	—	मोटा-ताजा	पिल्ला
प्रगल्भ युवक	—	प्रगल्भ	युवक	चमकती आँखें	—	चमकती	आँखे
कंबख्त बुढ़ापा	—	कंबख्त	बुढ़ापा	असह्य चोट	—	असहय	चोट
ताजा खून	—	ताजा	खून	संकोची किशोर	—	संकोची	किशोर
घायल कुत्ता	—	घायल	कुत्ता	साहसी जीव	—	साहसी	जीव

2. बच्चा — बचपन बूढ़ा — बुढ़ापा जवान — जवानी
   युवक — यौवन नारी — नारीत्व फटकारना — अपमानित

3. **उदाहरण :** झड़ुआए, उबकाई, दुपहिया, सजल, विधान, करूणा, दुत्कार, प्राति

4. **क.** टकटकी लागकर देखना
   राधा कृष्ण के मनमोहक रूप को टुकुर-टुकुर देखती थी।

ख. तिरस्कार, अपमान करना
बार-बार दुत्कारे जाने के बाद भी कुत्ता पूँछ हिलाता रहा।

ग. निश्चित होन, बेफिक्र होना
राहुल काम-धंधा कुछ करता नहीं और घोड़े बेचकर सोता रहता है।

घ. धीरे-धीरे मृत्यु के मुख में जाना
तिल-तिल कर मरने से अच्छा है कि मनुष्य के पास जितनी जिंदगी है वह उसे खुश होकर बताये।

ङ. दूर हो जाना या गायब होना

मुझे समझ नहीं आता कि आखिर क्यों तुम मुझे देखकर भी आँखों से ओझल करना चाहते हो।

च. प्रसन्न होना

कारगिल विजय का समाचार सुनकर प्रधानमंत्री की आँखे चमक उठी।

5. **क.** कार खुलने पर कुत्ता नीचे कूद गया।

ख. कुत्ते ने चौकीदारी करने के बावजूद भी चोरी हो गई।

ग. कुत्ता थक गया और वह खाट के नीचे लेट गया।

घ. रानी की नींद टूटने पर वह अपने कमरे से बाहर आ गई।

ङ. कुत्ता रानी के साथ उसकी पलंग के नीचे सोता था।

निर्णय का अभिवादन

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (ii); **ग.** (ii); **घ.** (iii)

2. **क.** कार दुर्घटना में जयंत को ज्यादा चोट तो नहीं आई थी लेकिन कार का काफी नुकसान हुआ था, अच्छा ही हुआ कि बाद में मरम्मत करवाने का सारा पैसा उसे बीमा कंपनी से मिल गया था।

ख. जयंत को रमेश से ईर्ष्या महसूस हुई क्योंकि रमेश किसी भी दिन जमशेदपुर ब्रांच का सहायक प्रबंधक हो सकता है, तब कोठी, कार आदि सब रमेश को मिल सकते है, यही सोचते हुए जयंत को हल्की सी ईर्ष्या हुई।

ग. जयंत दिनेश के घर इसलिए नहीं ठहरना चाहता था क्योंकि पिछली बार पटना शहर पर वह दिनेश के साथ ही ठहरा था, इसलिए फिर दिनेश के घर ठहरने से वह झिझक रहा था।

घ. पैराडाइज लॉज वही लॉज था जिसमें जयंत पिछले साल भी ठहरा था, खिड़की के पास करीने से रखी गई कुर्सी पर बैठकर वह मुसकाया। अवकाश के समय इस खिड़की के पास बैठकर बाहर सड़क की ओर देखते रहना उसे पसंद था, पैराडाइज लॉज की यह विशेषता थी कि जलती हुई बत्तियों के प्रकाश में बाहर फैला हुआ खिड़की से पूरा शहर बहुत खूबसूरत लगता था।

ङ. अकसर रात का खाना खाने के बाद पिता उसे अपने फ़ौज के दिनों के अनुभव सुनाने लगते। बातें करते हुए डेढ़-दो बज जाते थे। पिता की इतिहास में बड़ी रुचि थी और अतीत में खो जाना उनकी आदत थी। शायद इन्हीं बातों का प्रभाव था कि बहुत छोटे से ही उसके हृदय में सेना में भरती होने की इच्छा थी।

न जाने क्यों यह सब सोचते हुए उस क्षण उसे लगा जैसे रमेश ठीक ही कर रहा है।

3. **क.** जयंत को नींद नहीं आ रही थी। उसने महसूस किया कि आँखों में नींद कही भी नहीं है, थोड़ी देर तक लेटे रहने के बाद वह फिर आकर खिड़की के पास बैठ गया। उसे उन दिनों की याद आई जब वह अपने माता-पिता के साथ कोलकाता में रहा करता था।

ख. पिताजी से बाते करते हुए अक्सर डेढ़-दो इसलिए बज जाते थे क्योंकि अक्सर रात का खाना खाने के बाद जयंत के पिता उसे अपने फौज के दिनों के अनुभव सुनाया करते थे।

ग. जयंत के पिता की इतिहास में बहुत बड़ी रूचि थी और अतीत में खो जाना उनकी आदत थी। बहुत छोटे से ही उसके हृदय में सेना में भरती होने की इच्छा थी।

4. **क.** रमेश; **ख.** जयंत

भाषा की बात.....

1. विज्ञापन — व् + इ + ज्ञ + आ + प् + अ + न् + अ
   आकर्षक — आ + क् + अ + र् + ष् + अ + क् + अ
   परीक्षण — प् + अ + र् + ई + क्ष् + अ + ण् + अ
   मरम्मत — म् + अ + र् + अ + म् + म् + अ + त् + अ
2. **क.** न; **ख.** मत; **ग.** नहीं; **घ.** मत; **ङ.** नहीं
3. **क.** सौभाग्य! जयंत धीरे <u>से</u> हँसा। — अपादान
   ख. जयंत <u>को</u> आश्चर्य हुआ। — कर्म कारक
   ग. बड़े अधिकारियों <u>में</u> भी उसका बहुत सम्मान था। — अधिकरण कारक
   घ. मैं भी सेवा प्राप्त करने <u>के लिए</u> उत्सुक हूँ। — संप्रदान कारक
4. **क.** अद्‌भुत! मौसम बहुत ही सुहावना है।
   ख. रमेश सुबह से ही जयंत के साथ नहीं था।
   ग. क्यों मुझे वेतन के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता?

परनिंदा

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (iii); **ग.** (ii); **घ.** (i)
2. **क.** कबीरदास जी ने कहा है कि व्यक्ति को अपनी निंदा करने वाले को हमेशा अपने पास रखना चाहिए, क्योंकि निंदा सुनकर ही हमारे अंदर स्वयं को निर्मल करने का विचार आ सकता है और यह निर्मलता पाने के लिए हमें किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं होगी।
   ख. लेखक अपने पड़ोसी के साथ एक कवि सम्मेलन में गए थे, लेखक के पड़ोसी ने कई कवियों के मुँह पर उनकी प्रशंसा की।
   ग. बहू ने पड़ोसिन को उपहार दिए क्योंकि एक दिन पड़ोसिन को उसके घर से कुछ लेना था, उस दिन सास घर पर नहीं थी, पड़ोसिन चतुर थी, उसने सास की निंदा करना प्रारंभ किया, पड़ोसिन ने बहू को रसमग्न कर दिया कि उसे बहू ने पड़ोसिन को सिर्फ चीज ही नहीं दी बल्कि अपनी ओर से उसे अनेक उपहार भी दिए।
   घ. पड़ोसी की पत्नी क्रोधित थी क्योंकि एक दिन ऐसा हुआ कि पड़ोसी सार्वजनिक रूप से अपनी सास की निंदा कर रहे थे, पड़ोसी निंदा करते-करते कह रहे थे कि सास का कितना चिड़चिड़ा स्वभाव है, वे इनसे कितनी बेगार करती है, कैसी लोभिन है, आदि-आदि। जैसे ही पड़ोसिन को पता चला कि उनके पति उनकी माँ की भी निंदा कर रहे हैं तो पड़ोसिन अत्यधिक क्रोधित हो गई।
   ङ. पड़ोसी ने कवियों का अभिनंदन भी उनकी निंदा करके किया, उनकी दृष्टि में कोई बनता बहुत था, किसी की आवाज रैंकने जैसी थी, किसी की सूरत पर बारह बज रहे

थे, किसी ने किसी दूसरे कवि के भावों का अपहरण किया था, उन्होंने जमकर सभी कवियों की निंदा करके अभिनंदन किया।

3. **क.** 'परनिंदा मीठी रोटी है जिधर से तोड़ो उधर से मीठी' से यह आशय है कि परनिंदा का मतलब दूसरों की बुराई रूपी रोटी जिस प्रकार खाओ अच्छी लगती है, अर्थात् निंदा करनेवाला दूसरों की बुराई के रूप में जो भी कहता है सब कुछ अच्छा लगता है। सुनने वाला भी मग्न होता है और निंदक भी रसलीन होता है।

   ख. लोग मौज उड़ाएँ और हम जबान से भी न कहें। अर्थात् अनुभव किया कि वे जब किसी की निंदा करते हैं तो तटस्थ भाव से करते हैं। आवश्यक नहीं कि जिसकी वे बुराई कर रहे हैं, उससे वे नाराज हों। उनकी तो बुराई करने की आदत पड़ गई है। किसी का दिल दुखाना उनका उद्देश्य नहीं।

   ग. 'श्रीमती जी के चेहरे पर ऐसी लाली थी जैसी कि जेठ मास की दोपहर में सूर्य की होती है' से यह आशय है कि जिस प्रकार जेठ मास की दोपहर में धूप तेज होती है उसी प्रकार श्रीमती जी का चेहरा भी तेज हो रखा था, इन पंक्तियों में जेठ मास की दोपहर की तेज धूप से चेहरे उनके गुस्से का वर्णन किया गया है।

भाषा की बात......

1. आनंद × वेदना प्रशंसा × निंदा निर्मल × मलिन
   चतुर × मुर्ख प्रारंभ × अंत अच्छा × बुरा
   सस्ता × महँगा फेल × पास बुराई × अच्छाई
2. योग्य — सुयोग्य गंध — सुगंध नयना — सुनयना
   प्रसिद्ध — सुप्रसिद्ध कन्या — सुकन्या अवसर — सुअवसर
   पुत्र — सुपुत्र रुचि — सुरुचि प्रभात — सुप्रभात
3. रात और दिन रात-दिन अन्न और जल अन्न-जल गंगा और यमुना गंगा-यमुना
   माता और पिता माता-पिता सुख और दुख सुख-दुख नमक और मिर्च नमक-मिर्च
4. **क.** गलत कार्य करते हुए पकड़ना
   पुलिस ने चोर को चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ा।

   ख. जान छुड़ाना
   हमारी पड़ोसन इतनी बातूनी है कि उससे पिंड छुड़ाना बहुत कठिन है।

   ग. किसी गोपनीय बात के प्रकट हो जाने का खतरा
   रमेश ने अपनी पत्नी से कहा कि पैसों की बाते धीरे-धीरे करो क्योंकि दीवारों के भी कान होते हैं।

   घ. किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना
   हमारी नौकरानी हर बात को नमक मिर्च लगाकर कहती है।

   ङ. किसी को दुख पहुँचना
   कान्ता बाई से प्यार से बात करने के बाद भी वह हमेशा दिल दुखाती है।

   च. किसी कार्य में लगकर मन प्रसन्न करना
   भावना जब अपने ससुराल आई तो मोबाइल देखकर मन बहलाने लगी।

9 शहीद नरश्रेष्ठ

लिखित कार्य

1. **क.** (iii); **ख.** (ii)
2. **क.** 'शहीद नरश्रेष्ठ' में युद्धभूमि को स्याही रखने का बर्तन और सैनिक को कलम के समान बताया गया है, क्योंकि जब युद्ध-भूमि में बलिदान होते है तो सैनिकों के बलिदानों के कागज पर उनकी महान कहानी लिखी हुई होती है।

   ख. सैनिकों को सुख-सुविधा की चाह इसलिए नहीं होती क्योंकि सैनिक सीमा पर पहरा देते हैं और फिर अपने घास-फूस से बने छोटे घर में लेट जाते हैं, फिर तुरंत ही युद्ध की राह पर चलते है, उनकी चाह अपनी भारत माँ की सुरक्षा के लिए होती है।

   ग. जब पूरी दुनियाँ सुख से भरी हुई नींद में सोयी रहती है, उस समय सैनिक आँखे खोलकर पहरा दे रहे होते हैं, और रात-रात भर अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हैं। पथरीली और काँटों से भरी हुई भूमि पर रक्षा करते है और भारत माँ की सेवा में सैनिक के चेहरे का प्रतिदिन तेज बढ़ता ही जाता है।

   घ. सैनिक को 'देशरत्न' इसलिए कहा जाता है क्योंकि भारत माँ के लिए युद्ध करते-करते यदि सैनिक का पूरा शरीर खून से भी सना हो तो फिर भी सैनिक हथियार हाथ में लेकर युद्ध करता है और कहता है कि चाहे पूरा बदन कट जाए पर मेरा सर न झुकेगा, ऐसे 'देशरत्न' को पाकर हम धन्य हुए जो देश के लिए मर मिटने को तैयार है।
3. **क.** सैनिक जाने से पहले पत्र लिखना चाहता है।

   ख. उसे कल संभवतः भारत माँ के लिए मिटने की आशंका है।

   ग. सैनिक को मर-मिटने की कोई चिंता नहीं है।
4. **भावार्थ :** उपुर्यक्त पंक्ति में कवि कहते हैं कि सैनिक जब हल्की-सी नीदं ले रहे होते है, तभी अचानक से पैरों की आहट सुनाई देती है, सैनिक जल्दी से अपने शस्त्र उठा कर साँप की तरह धरती पर रेंगते हुए चलते हैं। सुख भोगने वाले क्या जाने सैनिक का साहस और हिम्मत, वे अवसर मिलते ही घनघोर बादल की तरह दुश्मन पर टूट पड़ते है, अपनी भारत माँ की रक्षा के लिए सैनिक पूरी रात जागते है।

भाषा की बात......

1.

समान	×	असमान	सुविधा	×	असुविधा	सुख	×	दुख
रात	×	दिन	आज	×	कल	विजय	×	पराजय

2.

राह	—	मार्ग, रास्ता	भूमि	—	धरती, वसुंधरा
जग	—	जगत, दुनिया	माँ	—	जननी, माता
आँख	—	नेत्र, नयन	साँप	—	सर्प, विषधर
रात	—	रात्रि, अंधकार	बादल	—	मेघ, जलधर

2.

समान	—	महान	चाह	—	राह	खोल	—	ढोल
सेज़	—	तेज़	ज़ोर	—	शोर	आज	—	काज
काम	—	धाम	हाथ	—	साथ	धूल	—	फूल

फ़ीस

लिखित कार्य

1. **क.** (ii); **ख.** (iii); **ग.** (ii); **घ.** (i); **ङ.** (i)
2. **क.** सुखिया ने पति की मृत्यु के बाद निश्चय किया कि वह कभी भी फिर से ब्याह नहीं करेगी, भले ही उसे कड़ी मेहनत करनी पड़े और उसने यह निश्चय इसलिए किया क्योंकि अब सुखिया के प्राण उसके दो वर्ष के बेटे में बसने लगे और वह अब अपने बेटे को काबिल बनाना चाहती है। उसे अब भगवान के सिवाय किसी और के सहारे की जरूरत भी नहीं है।

   ख. डॉ प्रसान ने सुखिया को भिखारिन कहा और कंपाउंडर को डाँटते हुए बोला कि "अरे, यह भिखारिन अंदर कैसे घुस आई? निकालो इसे फौरन," डॉ प्रसाद पर जैसे शैवार हो रखा था वे गुस्से में आग-बबूला होकर अपने शब्दों को ओठों में चबाते हुए बोले निकल यहाँ से बाहर, डॉ प्रसाद का सुखिया के प्रति उनका व्यवहार भिखारिन के सिवाय कुछ नहीं था।

   ग. डॉ प्रकाश ने डॉ प्रसाद की भेंट में एक लिफ़ाफ़ा दिया और कहा कि आपकों मेरी इस भेंट का जरूर स्वीकार करना होगा, डॉ प्रसाद ने घर जाकर जब डॉ प्रकाश द्वारा दिए गए उस भारी लिफ़ाफ़े को खोलकर देखा तो उसे देखकर डॉ प्रसाद सन्न रह गए, उन्होंने ऑपरेशन की जितनी फ़ीस जमा की थी, सब वापस कर दी थी। लिफ़ाफ़े में एक छोटे कागज पर लिखा हुआ एक छोटा-सा पत्र भी रखा था।

   घ. डॉ प्रकाश ने पत्र में लिखा था—

   श्री डॉ प्रसाद,

   आप जानते हैं, मैं गरीबों से प.हीस नहीं लेता। आपसे अधिक गरीब इस दुनिया में भला कौन होगा! सोने-चाँदी से भले ही आपके भंडार भरे हों, पर दया, करुणा, सहानुभूति जैसे सद्‌गुणों का छदाम भी आपके पास नहीं है। सचमुच ये गणु ही तो मनुष्य की सच्ची संपत्ति हैं। आपको याद दिलाता हूँ, बीस वर्ष पहले आपने मेरा इलाज करने से मना कर दिया था। वह भी सिर्फ़ इसलिए कि मेरी मजदूर माँ के पास आपकी तिजोरी भरने की फ़ीस नहीं थी। आपने जिसे मालिन समझा था, वह मेरी पूज्य माँ थीं।

   मैंने अपना फर्ज निभाया है। अपनी माँ के आदेश पर मैं आपकी दी हुई फ़ीस लौटा रहा हूँ। आशा है, इससे आपकी गरीबी मिटने में सहायता मिलेगी।

   आपका

   आनंद प्रकाश

   पत्र पढ़कर डॉ० प्रसाद दोनों हाथों से अपना सिर पकड़कर बैठ गए।
3. **क.** सुखिया ने कंपाउंडर से

   ख. कंपाउंडर ने सुखिया से

   ग. डॉ प्रसाद ने कंपाउंडर से

   घ. डॉ प्रकाश ने डॉ प्रसाद से

   ङ. सुखिया ने डॉ प्रसाद से

भाषा की बात.....

1. गरीब × अमीर सुख × दुख दुर्भाग्य × सौभाग्य
   मौख़िक × लिखित सहारा × बेसहारा दयालु × निर्दयी
   निराशा × आशा उधार × नगद बाहर × अन्दर
   घृणा × प्रेम लाभ × हानि ज्ञात × अज्ञात
2. शिष्टाचार, आदर्शवादी, बेबस, भिखारिन, घमंडी
3. मुस्कुराना + आहट = मुस्कुराहट — मुस्कुराने की क्रिया
   चिल्लाना + आहट = चिल्लाहट — शोरगुल, हल्ला
   गड़गड़ाना + आहट = गड़गड़ाहट — बादल गरजने का शोर
4. स्वाभिमान — स्व + अभिमान निस्स्वार्थ — निः + स्वार्थ
   निश्चय — निः + चय निर्ममता — निर + ममता
   उत्तराधिकारी — उत्तर + अधिकारी सानंद — स + आनन्द
   नियमानुसार — नियम + अनुसार सज्जन — सत् + जन
5. **क.** अत्यधिक प्रसन्न होना
   हीरालाल के बेटे की नौकरी क्या लग गई हीराला तो फूला न समा रहा था।
   ख. अपनी बुद्धि को खा देना
   श्याम को नौकरी न मिलने से उसके धैर्य का बाँध टूट गया।
   ग. बुराई में अच्छाई का होना।
   श्याम अपने परिवार में कीचड़ में कमल जैसे है।
   घ. बहुत क्रोधित होना
   देश को नुकसान पहुँचाने की बात सुनकर हर देशवासी आग बबूला हो जाता है।
   ङ. मुश्किल से दिखना
   कृष्ण जब से गोकुल छोड़ कर गए वह गोपियों के लिए दूज का चाँद हो गए।
   च. लड़ाई-झगड़ा या गुस्सा चढ़ना
   यदि कोई सुनील की बात नहीं मानता तो उसके सर पर शैतान सवार हो जाता है।

नारी

लिखित कार्य

1. **क.** (ii); **ख.** (i); **ग.** (iii); **घ.** (i); **ङ.** (ii)
2. **क.** नर समाज में नारी शक्ति को आद्या शक्ति कहा जाता है। यही वह शक्ति है जो जीवलोक में प्राण को वहन करती है, उसका पोषण करती है। फिर भी नारी की बुद्धि, उसके संस्कार और आचरण युग-युग से निर्दिष्ट सीमाओं में आबद्ध रहे हैं। उसकी शिक्षा और उसके विश्वास को बाह्य जगत की विशाल अभिज्ञता के बीच अपनी परख का सुयोग नहीं मिला। बाल्यकाल से ही पुरुष स्त्रियों की सहायता से बड़े हुए हैं, लेकिन उन्हीं के द्वारा स्त्रियों पर सबसे अधिक अत्याचार किए गए हैं।

ख. बंद पालकी का वह युग आज बहुत दूर चला गया है—वह धीरे-धीरे नहीं गया, उसने बड़ी तेज़ी से प्रस्थान किया है। बदलते हुए परिवेश के साथ-साथ ही यह परिवर्तन आया है। उसके लिए किसी को कभी समिति का आयोजन नहीं करना पड़ा। लड़कियों के विवाह की आयु देखते ही देखते आगे बढ़ गई है। यह भी स्वाभाविक रूप से ही हुआ है। जब प्राकृतिक कारणों से नदी की धारा बढ़ जाती है तो तटीय-भूमि की सीमा स्वतः पीछे हटती है। नारी जीवन में आज सभी दिशाओं से तट की सीमा अपने-आप पीछे हट रही है। जीवन की नदी महानदी हो उठी है।

ग. रवींद्र के बाल्यकाल में जब घर से बाहर निकलना होता था तो स्त्रियों के लिए पालकी में बैठना अनिवार्य था। प्रतिष्ठित परिवारों में पालकी के ऊपर परदा डाल दिया जाता था। बेथ्यून स्कूल में जो लड़कियाँ सबसे पहले भरती हुई थीं उनमें मेरी बड़ी बहन अग्रणी थी। वह खुले दरवाज़े की पालकी से स्कूल जाती थी। उस समय के श्रेष्ठवंशीय आदर्श को इससे काफ़ी धक्का पहुँचा था।

घ. घर-परिवार की छोटी परिधि में जब तक स्त्रियों का जीवन आबद्ध था तब तक नारी मन की स्वाभाविक प्रवृत्तियों से सहज ही उनके सब काम संपन्न हो जाते थे। गृहस्थी के काम के लिए किसी विशेष शिक्षा की ज़रूरत नहीं थी।

ङ. इस सभ्यता की राजनीति, अर्थनीति और समाज-शासनतंत्र की रचना पुरुषों ने की। स्त्रियाँ प्रकाशहीन अंतराल में रहकर घर का काम करती रहीं। यह सभ्यता एकांगी थी, इसमें मानवचित्त की संपदा को क्षति पहुँची है। चित्त की संपदा नारी हृदय के भंडार में बंद पड़ी थी। आज उस भंडार का द्वार खुला है।

3. **क.** स्त्री जीवन के विस्तार से मुक्त संसार में उनका पदार्पण हो रहा है, ऐसा होने से आत्मरक्षा और आत्मसम्मान के लिए विद्या और बुद्धि का विकास आवश्यक हो गया है।

ख. आज भद्र समाज की स्त्रियों के लिए निरक्षरता सबसे बड़ी लज्जा है। किसी समय छाते और जूते का व्यवहार उनके लिए लज्जास्पद था, लेकिन आज उसकी अपेक्षा निरक्षर होना कहीं अधिक लज्जास्पद है।

ग. पीसने और कूटने की क्रियाओं में यदि नैपुण्य न हो तो आज वह अख्याति का कारण नहीं है।

घ. वधू परीक्षा में उस विद्या की ओर ध्यान दिया जाता है जिसका मूल्य सार्वभौमिक है और जो केवल गृहस्थी के प्रयोजनों की सिद्धि तक ही सीमित नहीं है। इस अवस्था में हमारे देश की आधुनिक स्त्रियों का मन घर से बाहर निकलकर विश्व समाज में प्रवेश कर रहा है।

4. **क.** मनुष्य की सृष्टि में नार पुरातनी है अर्थात् हमारे समाज में नारी शक्ति को आद्या शक्ति कहा जाता है। यही वह शक्ति है जो जीवलोक में प्राण को वहन करती है, उसका पोषण करती है।

ख. जब प्राकृतिक कारणों से नदी की धारा बढ़ जाती है जो तटीय भूमि की सीमा स्वतः पीछे हटती है। नारी जीवन में आज सभी दिशाओं से तट की सीमा अपने-आप पीछे हट रही है। जीवन की नदी महानदी हो उठी है।

भाषा की बात.....

1. गयानी — ज्ञानी शुशुभित — सुशोभित बुद्धी — बुद्धि
   आल्हाद — औलाद कश्ट — कष्ट क्रपा — कृपा
   भूगोलिक — भौगोलिक स्त्रीयाँ — स्त्रियाँ सनतुश्ट — सन्तुष्ट
   छुटटीयाँ — छुट्टियाँ परतयेक — प्रत्येक वीसतरत — विस्तृत
2. **ख.** जलमाला की धारा रूक नहीं सकती।
   ग. आकश में चाँद चमक रहा था।
   घ. आँधी में वायु सें वृक्ष गिर गया।
   ङ. मैने दिवस में अपनी नेत्रों से देखा है।
3. **ख.** आज वर परीक्षा है।
   ग. सरकस में शेरनी, हथनी और मैना भी थी।
   घ. लेखिका महोदया संपादक भी है।
   ङ. श्री मैथानी के पिताजी प्रधानाध्यापक है।
4. **क.** स्त्री — स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक होते है।
   पत्नी — मुझे अपनी पत्नी से प्रेम है।
   ख. आज्ञा — हमें अपने से बढ़ों की आज्ञा का पालन करना चाहिए।
   अनुमति — कोई भी घटना उसकी अनुमति के बिना नहीं हो सकती।
   ग. क्रांति — भारतीयों ने अंग्रेज़ों के खिलाफ क्रांति छेड़ी।
   युद्ध — भारत ने पाकिस्तान से युद्ध में विजय प्राप्त की।
   घ. पुरातन — हिन्दुत्व एक पुरातन धर्म है।
   सनातन — सनातन धर्म में पुराण, मूर्ति पूजा आदि विहित और मान्य है।
5. **ख.** डर से आधुनिक धारा को नहीं मोड़ा जा सकता। — करण, कर्म कारक
   ग. शासन तंत्र की रचना पुरुषों ने की है। — संबंध, संबंध कारक
   घ. स्त्रियों के ललाट से ही घूँघट दूर नहीं हुआ है। — संबंध, अपादान कारक

मनमोहक खेल

लिखित कार्य

1. **क.** (ii); **ख.** (iii); **ग.** (i); **घ.** (iii); **ङ.** (ii); **च.** (iii)
2. **क.** इन सभी खेलों में स्थलीय खेल सबसे कम खर्चीले के होते हैं, क्योंकि इनमें विशेष संसाधनों की जरूरत नहीं पड़ती और यह खेल आसानी से संपन्न हो जाते है, जबकि जलीय या हवाई खेलों के लिए विशेष संसाधनों की जरूरत पड़ती है।
   ख. ऊँचे पहाड़ों, हिममंडित शिखरों पर चढ़ना पर्वतारोहण कहलाता है। ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ने के लिए व्यक्ति को रास्ता स्वयं ही बनाना पड़ता है। इसके लिए निपुणता, कौशल, तत्परता, सजगता, धैर्य और साहस जैसे गुण अनिवार्य हैं।

पर्वतारोहण के समय ऑक्सीजन-सिलेंडर, स्लीपिंग बैग, धूप का चश्मा, आवश्यक प्राथमिक चिकित्सा सामग्री, ट्रैकिंग के जूते, नोट बुक, कैमरा और अन्य आवश्यक सामान, जिसे उठाकर चला जा सके, साथ ले जाना चाहिए।

ग. 26 नवंबर, 2005 को विजयपत सिंघानिया ने गरम हवा के बैलून में उड़ते हुए 21,290 मीटर की ऊँचाई तक पहुँचकर एक नया विश्व रिकार्ड कायम किया। 15 जनवरी, 1991 को ग्रेट ब्रिटेन के निवासी पर्लिंडस्ट्रेंड और रिचर्ड ब्रेनसन ने गरम हवा के बैलून द्वारा जापान से उत्तरी कनाडा तक 7,671.91 किलोमीटर की लंबी यात्रा पूरी की।

घ. पैरासेलिंग खेल में खुले मैदान में पैरासेल को रस्सी की सहायता से गाड़ी से बाँध दिया जाता है। गाड़ी के चलने के साथ खिलाड़ी कभी पैरासेल बाँधकर दौड़ता है, जिससे पैरासेल में हवा भर जाती है और हवा में ऊपर तैरने का आनंद आता है। इस खेल के लिए विस्तृत खुला मैदान, जीप गाड़ी, पैरासेल, रस्सी, हैलमेट, जीवन रक्षक जैकेट आदि की आवश्यकता होती है।

ङ. नदी की तीव्र धारा के प्रवाह की विपरीत दिशा में नाव चलाना एक साहसिक कार्य है। गंगा की धारा देवप्रयाग से आगे बड़ी तीव्र और वेगवती होती है। राफ़्टिंग के लिए यह हिस्सा बड़ा उपयुक्त है। यह खेल आनंददायी तो है, परंतु अत्यधिक जोखिम से भरा होता है। अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में यह खेल बहुत प्रचलित है।

3. **क.** ऊँचे पहाड़ों, हिममंडित शिखरों पर चढ़ना पर्वतारोहण कहलाता है।

ख. पर्वतारोहण संस्थाएँ पहाड़ों पर चढ़ने का प्रशिक्षण भी देती हैं। नैनीताल माउंटेनियरिंग क्लब, नैनीताल; रामजस स्पोर्ट्स एण्ड माउंटेनियरिंग इंस्टीटयूट, पटेल नगर, नई दिल्ली; नेहरू पर्वतारोहण संस्थान, उत्तरकाशी (उत्तराखंड) जैसी कई और संस्थाएँ पर्वतारोहण का प्रशिक्षण देती हैं।

ग. पर्वतारोहण के समय ऑक्सीजन-सिलेंडर, स्लीपिंग बैग, धूप का चश्मा, आवश्यक प्राथमिक चिकित्सा सामग्री, ट्रैकिंग के जूते, नोट बुक, कैमरा और अन्य आवश्यक सामान, जिसे उठाकर चला जा सके, साथ ले जाना चाहिए।

भाषा की बात.....

1. योगाभ्यास — योग + अभ्यास
   संवेगात्मक — संवेग + आत्मक
   पर्वतारोहण — पर्वत + आरोहण
   पूर्वार्द्ध — पूर्व + अर्द्ध
   सर्वाधिक — सर्व + अधिक
   आत्मानुशासन — आत्म + अनुशासन
   शारीरिक — शरीर + इक
   पथारोहण — पथ + आरोहण
   अंतरराष्ट्रीय — अंतः + राष्ट्रीय
   आवासीय — आवास + इय

2. स्वस्थ × अस्वस्थ, उत्तम × अधम, आधुनिक × प्राचीन
   साहसी × कायर, सकारात्मक × नकारात्मक, ग्रामीण × शहरी
   आवश्यक × अनावश्यक, विजय × पराजय, पक्ष × विपक्ष
   समतल × ढालू, प्रशिक्षित × अप्रशिक्षित, मित्रता × शत्रुता

3. **क.** गगन, आसमान; **ख.** सरोवर, तालाब; **ग.** मार्ग, राह; **घ.** वायु, पवन;
ङ. सरिता, तटिनी; **च.** पर्वत, गिरि; **छ.** कंचन, कनक; **ज.** दोस्त, सखा

4. शरीर — शरीर + इक = शारीरिक मानस — मानस + इक = मानसिक
साहस — साहस + इक = साहसिक प्रथम — प्रथम + इक = प्राथमिक
आनंद — आनंद + इत = आनंदित सम्मान — सम्मान + इत = सम्मानित
आयोजन — आयोजन + इत = आयोजित विस्तार — विस्तार + इत = विस्तारित

5. **क.** के लिए; **ख.** के अनुसार; **ग.** के विपरित; **घ.** के दबाव; **ङ.** के लिए

सुदामा-चरित

लिखित कार्य

1. **क.** (ii); **ख.** (iii); **ग.** (iii); **घ.** (i)

2. **क.** द्वारपाल ने श्रीकृष्ण से सुदामा की दशा का वर्णन करते हुए कहा है कि उसके तन पर ना कपड़े है, ना पैरों पर जूते हैं, धोती भी फटी है, उसके पैरों पर छाले पड़े हुए है और आपको अपना मित्र बता रहा है। वह कह रहा है कि मुझे द्वारिकाधीश से मिलना है, और अपना नाम सुदामा बता रहा है।

   ख. जब सुदामा दीन-हीन अवस्था में कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण उन्हें देखकर व्यथित हो उठे, श्रीकृष्ण ने सुदामा के आगमन पर उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी मँगवाया परन्तु सुदामा की दुर्दशा देखकर श्रीकृष्ण को इतना कष्ट हुआ कि वे स्वयं रो पड़े और उनके आँसुओं से ही सुदामा के पैर धुल गए, इसलिए श्रीकृष्ण को पानी की परात छूने की जरूरत भी नहीं पड़ी।

   ग. श्रीकृष्ण ने सुदामा की उन्हें बिना बताए सहायत की थी। श्रीकृष्ण ने सुदामा की सहायता गरीबी के दिनों में करके सच्चा मित्र होने का प्रमाण दिया, उन्होंने सुदामा की मदद अप्रत्यक्ष रूप में सुदामा को अपनी नजरों में नीचा होने से बचा लिया। उनका यह कृत्य उनकी सच्ची मित्रता होने का संदेश देती है, और सच्ची मित्रता निभाने की विशेषता को भी प्रकट करता है।

   घ. सुदामा-चरित नरोत्तम दास द्वारा लिखित सच्चे मित्र की सीखे देने वाली श्रेष्ठतम कविता है, कृष्ण और सुदामा बचपन के मित्र थे। सुदामा की बहुत दिनो के द्वारिका आए, कृष्ण से मिलने के लिए कारण था, उनकी पत्नी के द्वारा उन्हें जबरदस्ती भेजा जाना। उनकी अपनी कोई इच्छा नहीं थी। बहुत दिनों के बाद दो मित्रों का मिलना और सुदामा की दीन अवस्था और कृष्ण की उदारता भी सुदामा-चरित में दिखाई गई है, सुदामा चरित के काव्य-पदों का मूल संदेश श्री कृष्ण जी द्वारा अपने मित्रता धर्म का पालन बिना सुदामा के कहे हुए उनके मन की बात जानना है और उनकी सच्चे मित्रता होने का संदेश देता है।

3. **क. भावार्थ :** द्वारपाल के मुँह से सुदामा के आने का जिक्र सुनते ही श्रीकृष्ण दौड़कर उन्हें लेने जाते है, उनके पैरों के छाले, घाव और उनमें चुभे कांटे देखकर श्रीकृष्ण को बहुत कष्ट होता है, वो कहते हैं कि मित्र तुमने बड़े दुखों में जीवन व्यतीत किया है।

ख. भावार्थ : सुदामा जी की दयनीय दशा देखकर श्रीकृष्ण रो पड़ते हैं और पानी की परात को छुए बिना, अपने आँसुओं से सुदामा जी के पैर धो देते हैं।

ग. भावार्थ : सुदामा जी अपनी पत्नी से बात करते हुए कहते हैं कि मेरी यहाँ टूटी-सी मढ़ैया (झोपड़ी) थी और मेरे साथ दुख के दिन काटती हुयी एक बुढ़िया की वो कहाँ है।

घ भावार्थ : मेरी वो पँडाइन कहा है। ये कैसी विपदा है कि वो कही मिल नही रही है।

4. **क. प्रसंग :** प्रस्तुत काव्यांश 'नरोत्तम दास' जी द्वारा रचित काव्य 'सुदामा चरित' से लिया गया है, इसमें श्री कृष्ण के बचपन के मित्र सुदामा अपनी पत्नी को आग्रह करने पर कुछ आर्थिक सहायता पाने की आशा में उनी नगरी द्वारका पैदल जा पहुँचे है, कवि ने उसी समय के दृश्य का वर्णन किया है।

भावार्थ : इस पद में कवि ने सुदामा के श्रीकृष्ण को महल के द्वारा पर खड़े होकर अंदर जाने की इजाजत माँगने का वर्णन किया है। श्रीकृष्ण का द्वारपाल आकर उन्हें बताता है कि द्वारा पर बिना पगड़ी, बिना जूते के, एक कमज़ोर आदमी फटी-सी धोती पहले खड़ा है, वो आश्चर्य से द्वारा को देख रहा है और अपना नाम सुदामा बताते हुए आपका पता पूछ रहा है।

ख. प्रसंग : प्रस्तुत काव्यांश 'नरोत्तम दास' जी द्वारा रचित काव्य 'सुदामा चरित' से लिया गया है, इसमें श्री कृष्ण सुदामा के मिलन तथा सुदामा की दीन अवस्था व कृष्ण की उदारता का वर्णन है।

भावार्थ : उपुर्यक्त पंक्ति में कवि कहते है कि कृष्ण सुदामा के विषय में सुनकर दौड़कर बाहर आए तथा सुदामा को बेहाल देखा। सुदामा की फटी ऐड़ियों वाले पैर से श्री कृष्ण ने काँटे खोजकर निकाले और प्रेम से बोले कि मेरे परम मित्र तुमसे अलग होना मेरे लिए महादुख था। तुम इतने दिन कहाँ रहे, सुदामा का ऐसा हाल देख कर दया से श्री कृष्ण रो पड़े। उन्होंने सुदामा के पैर धोने के लिये मंगाई परात को हाथ नहीं लगाया बल्कि अपने आँसूओं से ही पैर धो डाले।

भाषा की बात.....

1.	जाम	—	जम्बुक	दीठि	—	दृष्टि	भौन	—	मौन
	प्रीत	—	प्रेम	दसा	—	दशा	करुना	—	करूणा
	मारग	—	मार्ग	परताप	—	प्रताप	पँडाइन	—	पंडिताइन
	गाँव	—	ग्राम	कुसल	—	कुशल	ब्राह्मनी	—	ब्राह्मणी

नमक सत्याग्रह

लिखित कार्य

1. **क.** (i); **ख.** (iii); **ग.** (ii); **घ.** (iii)

2. **क.** गाँधी जी ने नमक सत्याग्रह के लिए दांडी यात्रा शुरू की थी, इस मार्च के जरिए बापू ने अंग्रेजों के बनाए नमक कानून को तोड़कर उस सत्ता को चुनौती दी थी, उनके विचार

में नमक पर टैक्स वसूलना पाप है क्योंकि यह हमारे भोजन का बुनियादी हिस्सा होता है। इसे अमीर और गरीब समान मात्रा में प्रयोग करते हैं।

ख. 'यंग इंडिया' में गाँधी जी ने भारतीय स्त्रियों से चरखे पर सूत कातने और अपने घरों के एकांत से बाहर निकलकर विदेशी वस्तुएँ और शराब बेचने वाली दुकानों तथा सरकारी संस्थानों पर धरना देने का आग्रह किया था।

ग. औरतों ने सार्वजनिक किस्म के राजनैतिक प्रदर्शनों में हिस्सा लिया था। उनमें से भी अधिकतर या तो चितरंजन दास या मोतीलाल नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेताओं के परिवार से संबद्ध थीं या बड़े शहरों की कॉलेज छात्राएँ थीं। इस बार अपेक्षाकृत बहुत ज़्यादा औरतों ने आंदोलन में हिस्सा लिया और अपने को गिरफ़्तार कराया और आंदोलन को सफल बनाया।

घ. कई बार प्रतिरोध विहीन व्यक्तियों को विधिवत मारकर खून से लथपथ कर देने वाले दृश्य देखकर मैं बीमार जैसा अनुभव करने लगा। इतना बीमार कि मैंने उधर से अपनी निगाह घुमा ली।

3. **क.** स्वयंसेवकों ने धीरे-धीरे और शांतिपूर्वक आधे मील की नमक भंडार तक की यात्रा पूरी की।

ख. नमक के भंडार को चारों ओर से पानी भरी खाइयों से घेरकर रखा गया था। इसलिए उसकी रखवाली के लिए सूरत पुलिस के 400 सिपाही तैनात थे।

ग. पुलिस के पास पाँच फुटी लाठियाँ थीं, जिनके सिरों पर लोहे जड़े थे।

4. **क.** इंतजार करती हुई भीड़ पर तड़तड़ाहट के साथ स्वयंसेवकों की सहानुभूति में आहें भरती रहीं से यह आशय है कि जिस प्रकार से देशी पुलिस के दर्जनों जवान जब स्वयंसेवकों पर झपट रहे थे और अपनी लोहे जड़ी लाठियों को स्वयंसेवकों के सिरों पर बेतहाशा मार रहे थे, उस भीड़ में हर स्वयंसेवकों से सहानुभूति में भी विलाप करने जैसा हो रहा था।

ख. 'उनकी सेवा करने वाली राष्ट्रवादी डॉक्टरों की संख्या कम ही थी' से आशय है कि जब पुलिस स्वयंसेवकों पर झपटी तो ज्यादातर स्वयंसेवक घायल हो गए और कुछ तो मर भी गए, जिनके लिए स्ट्रेचर भी कम पड़ रहे थे, तो उनकी सेवा करने में राष्ट्रवादी डॉक्टरों की संख्या भी कम पड़ रही थी।

भाषा की बात.....

1. **क.** उनकी जगह तैयब जी आंदोलन के नेता हुए।

ख. पुलिस के पास पाँच फुटी लाठियाँ थीं।

ग. अहिंसक संगठन लगभग कई अवसरों पर टूटा।

घ. पुलिस ने स्ट्रेचर-वाहकों से छेड़खानी नहीं की।

ङ. नेता स्वयंसेवकों पर नियंत्रण रखने में कामयाब रहे।

च. भारी जय-जयकार के साथ नायडू का भाषण समाप्त हुआ।

2. तत्सम — ऊपर, गिरफ़्तार, अहसास, आधा, रोज, गाँव, पाँच, सिर, लोहा
तद्भव — अनुयायी, दस्ता, चेतना, स्नेह, उद्बोधन, उल्लंघन
विदेशी — डिग्री, डॉक्टर, इंडिया, स्ट्रेचर, कॉलेज

3. **क.** सिर पर कफन बाँधकर; **ख.** उँगली उठाने; **ग.** आँखों में धूल झोंककर;
घ. नाकों चने चबा

4. **क.** उनका भाषण भारी जय-जयकार के साथ खत्म हुआ।
ख. मैने असुरक्षित खोपड़ियों पर बरसती हुई लाठियों की घातक तड़तड़ाहट सुनी।
ग. मौसम बहुत गरम हो गया था।

15 देवभूमि कुल्लू

लिखित कार्य

1. **क.** (ii); **ख.** (i); **ग.** (iii); **घ.** (i); **ङ.** (iii)

2. **क.** कुल्लू प्राचीन हिंदू-सभ्यता का गहवारा है। यहाँ प्रत्येक कस्बे और ग्राम के अपने-अपने देवता हैं, जो अपने-अपने मंदिरों में बैठे हुए लोगों की पूजा पाते हैं और साल में एक बार अपने-अपने रथों में बैठकर कुल्लू के रघुनाथ मंदिर में प्रतिष्ठित राम की उपासना के लिए जाते हैं।

ख. सैकड़ों देवी-देवताओं और उनके मंदिरों के कारण और इस विराट देव-सम्मेलन के कारण ही कुल्लू प्रदेश का नाम देवताओं का अंचल (वैली ऑफ दि गॉड्स) पड़ा है। ये सब असंख्य देवी-देवता और ऋषि-मुनि यहाँ के आदिम निवासियों द्वारा पूजे जाते थे।

ग. मनाली या मुनाली ने यह नाम 'मुनाल' नामक पक्षी से पाया, जो यहाँ बहुतायत में पाया जाता है। ए.फ़ेजेंट जाति का हिमालय का यह पक्षी अत्यंत सुंदर होता है। इसके संबंध में यहाँ के लोगों में कई किंवदंतियाँ भी सुनने में आती हैं।

घ. मनाली से दो मील की दूरी पर वशिष्ठ नाम का गाँव है, वशिष्ठ गाँव की यह विशेषता है यहाँ गरम पानी के कुंड हैं और वशिष्ठ मंदिर भी है। कहते हैं कि वशिष्ठ ऋषि यहीं तपस्या करते-करते पाषाण हो गए थे, उनकी पाषाण मूर्ति वहाँ पूजी भी जाती है। यहाँ पानी में गंधक की मात्रा काफ़ी है और यह स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा है।

ङ. रोहतांग के पहाड़ों पर व्यासन नदी कहीं-कहीं अदृश्य हो जाती है। इसका कारण यह है कि व्यास नदी बहुत तीव्र गति से नीचे उतरती है। अपने मार्ग के पहले पाँच मील में जितना नीचे उतर आती है, वह उतना अगले पचास मील में नहीं और उसके बाद में पाँच सौ मील में नहीं।

3. [3] रोहतांग की जोत पर ही व्यास-कुंड है।
[4] दाना के दूसरी ओर पहाड़ के ढलान पर हिडिंबा देवी का मंदिर है।
[5] मैं मनाली स्वास्थ्य लाभ करने के लिए आया था।
[1] दस बजे हम लोग औट पहुँचे।
[2] कटराई से चलकर मोटर कलाथ होती हुई मनाली जा पहुँची।

4. **क.** मनाली अपनी स्थिति के कारण ही नहीं, सौंदर्य के कारण भी देवताओं के अंचल का सुनहला ऊपरी छोर है।

ख. लेखक की आँखें इस विराट सौंदर्य को पीती जाती थीं और मानो अपने पर विश्वास नहीं कर पाती थीं। सींखचों का संस्कार इतना गहरा पड़ गया था कि मैं बाहर बिखरी हुई सौंदर्य-राशि को देखकर भी भीतर में अपने पुराने बंदी-जीवन की स्मृतियाँ निकालता जाता था—जैसे शाही पोशाक में लिपटकर भी भिखमंगा अपनी फटी हुई और थिगरों से भूषित गुदड़ी को नहीं भूलता।

ग. मनाली की सुंदरता ने उन स्मृतियों पर अपनी छाप डाल दी, वे अपने आपमें कटु स्मृतियाँ मानों सुंदरता के ढाँचे, में ढलकर निकलने लगी, मनाली की सौंदर्यता का लेखक पर गहरा प्रभाव पड़ा।

घ. मनाली के सौंदर्य दृश्य को देखकर और सींखचों के संस्कार लेखक पर इतने गहरे पड़ गये कि शाही पोशाके में लिपटकर भी लेखक अपने आप को भिखमंगा समझने लगे।

5. **क.** पहले यह मार्ग पैदल चलने वाले साहसिक लोगों के लिए बड़ा भारी आकर्षण था, लेकिन अब पक्की सड़क बन जाने से शिमला से फ़ैशनेबल सैलानी 'वीक-एंड' बिताने के लिए मोटर में बैठकर सीधे मनाली आ सकते हैं। आस-पास का सौंदर्य अब भी वही है, लेकिन चमत्कार नष्ट हो गया है।

ख. भारतीय समाज और संस्कृति — उसका ज्ञान मेरा अधूरा ही था, इसलिए चित्र ठीक नहीं था। अब नए अनुभव के आधार पर परिवर्तन और परिष्कार करके मैं उसे फिर हिंदी में लिखना चाहता था। उपन्यास को मैं जीवन-दर्शन मानता हूँ और इस दृष्टि से, गंभीर चीज लिखने के लिए एकांत जरूरी था।

भाषा की बात.....

1.

कल	—	काल	समय	कर	—	टैक्स	हाथ
तीर	—	बाण	तट	पद	—	चरण	पैर
अंबर	—	आकाश	गगन	मत	—	वोट	राय

2.

क.	ग्रह	—	सूर्य, चन्द्र	पृथ्वी एकमात्र ग्रह है, जहाँ जीवन है।
	गृह	—	घर, आवास	मेरा गृह बहुत सन्दर है।
ख.	अपेक्षा	—	उम्मीद	अत्यधिक अपेक्षा दुख का करण है।
	उपेक्षा	—	तिरस्कार	अपने प्रति इस उपेक्षा से वह आहत हो उठी।
ग.	उपकार	—	लाभ, फायदा	इस औषधि ने बड़ा उपकार किया।
	अपकार	—	बुराई, अपमान	हमें बड़ों का अपकार नहीं करना चाहिए।
घ.	क्रम	—	सिलसिला	सभी बच्चे क्रम से आएँ।
	कर्म	—	काम	तुम कर्म करो, फल की चिंता मत करो।
ङ.	उधार	—	देय राशि	दुकानदार ने उधार देना बंद कर दिया है।
	उद्‌धार	—	ऊपर उठाना	माता-पिता का उद्‌धार पुत्र के हाथों ही होता है।

3.

	वाक्य	**भेद**
क.	<u>सुबह दस बजे</u> हम लोग औट पहुँचे।	कालवाचक
ख.	<u>धीरे-धीरे</u> साँझ ढलने लगी।	रीतिवाचक

ग. कहीं-कहीं बड़े खतरनाक गड्ढे थे। रीतिवाचक

घ. पानी में गंधक की मात्रा काफ़ी है। परिमाणवाचक

ङ. ऋषि वशिष्ठ यहीं तपस्या करते-करते पाषाण हो गए। स्थानावाचक

4. **क.** मिश्र वाक्य; **ख.** सरल वाक्य; **ग.** संयुक्त वाक्य; **घ.** संयुक्त वाक्य; **ङ.** सरल वाक्य

फ़्लाइंग ऑफ़िसर : शेखों

लिखित कार्य

1. **क.** (ii); **ख.** (iii); **ग.** (ii)

2. **क.** दुश्मन के हमारे विमानों का खड़ी हालत में ही विनाश कर देना। जितना अधिक उतना बेहतर। इसीलिए वे एक बार डाइव मारकर गोलियों और रॉकेटों से प्रहार करने के बाद फिर ऊपर चढ़, चक्कर लगाकर पुनः डाइव मारते। उन्होंने यही क्रम चालू रखा, जिससे हमारे विमानों की धुनाई हो।

   ख. हवाई अड्डे पर शत्रु के विमानों का हमला अकस्मात हुआ। हमारा रडार पूर्व चेतावनी नहीं दे पाया। हमले का पहला झपट्टा मारकर शत्रु के विमान ऊपर चढ़ गए। उसी समय फ़्लाइंग ऑफ़िसर शेखों दौड़कर अपने नेट में जा बैठे। उन्होंने शत्रु के विमानों के दूसरे झपट्टे का इंतज़ार किया। थोड़ी ही देर में वे फिर आए और रॉकेट छोड़कर, गोलियों की झड़ी लगाकर, फिर ऊपर चढ़ गए। फ़्लाइंग ऑफ़िसर शेखों ने तब तक अपना हिसाब लगाकर इंजन स्टार्ट कर दिया था।

   ग. दुश्मन के विमानों के फड़फड़ाते हुए ऊपर से गुज़रते ही शेखों ने नेट को तेज़ी से हवाई पट्टी के कोने तक ले जाकर फुर्ती के साथ मोड़ा। कुछ सेकंड बाद उनका विमान पट्टी पर सनसनाता नज़र आया। यह क्या? सब देखने वाले चौंके!

   दुश्मन के छह आधुनिक विमान सिर पर मँडरा रहे थे और नेट जैसे पुराने ढर्रे के विमान में बैठा एक अकेला जाँबाज़ उनसे लोहा लेने ऊपर जा चढ़ा। ऐसी हिम्मत तो आज तक किसी ने नहीं दिखाई थी। ऐसा जोखिम भरा काम कोई रणबाँकुरा ही कर सकता है।

   घ. फ्लाइंग ऑफ़िसर शेखों ने शत्रु के एक विमान को निशाना बना उस पर अपनी तोप दाग दी। गोला ठीक बीचोंबीच निशाने पर लगा। विमान वहीं दो टुकड़े हो ढह गया। फिर अपने नेट को बड़े कौशल के साथ निशाना लगाने की दिशा में लाकर एक गोला और दागा। इससे दुश्मन के एक विमान में आग लग गई और धुएँ के गुबार छोड़ता वह विमान राजौरी की ओर गिर गया।

   ङ. भारत पाकिस्तान के बीच हुई जंग और जवानों के शैर्य को जब याद किया जाता है तो फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह शेखों की वीरता को चक्र और उनका नाम बड़े गर्व से लिया जाता है। भारत-पाकिस्तान 1971 युद्ध के जाबाज परमवीर चक्र विजेता शेखों ने विपरीत परिस्थितयों की परवाह किए बगैर पाकिस्तान के 6 जेट विमानों को अकेले धूल चटाई और दो को डॉग फाइट में मार गिराया, बाकी के चार विमानों को भाग जाने पर मजबूर किया।

3. **क.** हमारे एक जेट के पीछे दुश्मन के छह जहाज लग गये थे।

ख. शेखों ने एक विमान को अपन निशाना बनाकर अपनी तोप दाग दी। गोला ठीक बीचोंबीच निशाने पर लगा और विमान दो टुकड़ों में ढह गया।

ग. अपने नेट को बड़े कौशल के साथ निशाना लगाने की दिशा में लाकर एक गोला और दागा। इससे दुश्मन के एक विमान में आग लग गई और धुएँ के गुबार छोड़ता वह विमान राजौरी की ओर भागता देखा गया।

भाषा की बात.....

1. नव + उदय — नवोदय
   लोक + उक्ति — लोकोक्ति
   रोग + उपचार — रोगोपचार
   वीर + उचित — वीरोचित
   विवाह + उत्सव — विवाहोत्सव
   वसंत + उत्सव — वसंतोत्सव

2. प्रारभ — प्रारंभ
   राजेद्र — राजेंद्र
   आधी — आँधी
   लाघना — लाँघना
   पथ — पंथ
   कधों — कंधों
   आगन — आँगन
   ततु — तंतु
   सिद्धात — सिद्धांत
   मयक — मयंक
   चद्रग्रहण — चंद्रग्रहण
   जगल — जंगल

3. **क.** मैं गुनगुने पानी से नहाता हूँ।

   ख. दूध में क्या पड़ गया है।

   ग. उसके हाथों में बेड़ियाँ पहना दो।

   घ. मेरे पास मात्र सौ रुपये हैं।

   ङ. देशभर में दीपावली मनाई गई।

4. **क.** मैंने ऐसा मुँह तोड़ जवाब दिया कि सबकी बोलती बंद हो गई।

   ख. पिता ने पुत्र की जिद के आगे हथियार डाल दिया।

   ग. बदमाश बच्चे प्रधानाचार्य को देखकर दुम दबाकर भाग गए।

   घ. अनेक बार भारत की सेना ने युद्ध में पाकिस्तान के छक्के छुड़ा दिए।